अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति का सन्देशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) 卐 सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार 卐 एक प्रति २ आना

वर्ष–३, अंक–३ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १९ अक्टूबर, '५६

मनुष्यदान

मनुष्य घर और परिवार की जिम्मेवारी से जब तक खुद होकर अलग नहीं होता है, तब तक कभी मुक्त हो नहीं सकता; या भगवान् ही देह में से छुड़ा दें, तो वह मुक्त हो सकता है ! लेकिन हम चाहते भी नहीं हैं कि मनुष्य घर से अलग हो जाय; बल्कि हम यह चाहते हैं कि घर की आसक्ति से वह मुक्त हो। इसी तरह, घर में यदि दो-चार भाई हों, तो एक भाई को देश के काम के लिए छोड़ा जा सकता है। फिर वह इधर-उधर के दस-बीस सार्वजनिक काम उठाने के बजाय एक ही बुनियादी काम उठा ले।

सर्वोदय-विचार भगवान् के समान पवित्र और सबके लिए प्रिय विचार है। उससे सबका कल्याण होगा। ऐसे विचार के लिए वाहन की जरूरत है। समाज के अच्छे लोग तो उसके वाहन होंगे और उनका वाहन होगा, उनका मन। अतः समाज के वजनदार लोग अगर इस काम को उठा लेंगे, तो भगवान् को गरुड़ और हनुमान के रूप में वाहन मिल जायगा और सर्वोदय-विचार शीघ्र फैलेगा। —विनोबा

विश्वशांति की राह

(विनोबा)

शांति की आज सबको भूख है, परंतु शांति भोगवृत्ति के नियंत्रण के बिना आ नहीं सकती। सारे समाज को उचित भोग प्राप्त हो, ऐसी ही योजना उसके लिए चाहिए। क्रोध और द्वेष का त्याग, प्रेम, उत्पादन के साधनों पर सबका अधिकार, विकेंद्रित समाज-रचना, अपना इंतजाम आप करना, केंद्रीय सत्ता पर निर्भर न रहना, परस्पर के प्रति संशय एवं अविश्वास को दूर करना और निर्भय बनना शांति के लिए जरूरी शर्तें हैं। लेकिन अब एक नयी खोज हुई कि बम से ही शांति होगी ! व्यक्ति की पारलौकिक उन्नति के लिए बाइबिल और समाज की उन्नति के लिए ऐटम बम, ऐसा बँटवारा ईसाइयों ने कर लिया ! मुसलमानों ने भी वैसा ही किया, हिंदुओं ने भी किया। परिणामतः धर्मग्रंथों पर से लोगों का आज विश्वास उठ गया है, लोग ऐसों को ढोंगी कहने लगे हैं।

हिंदुस्तान की क्या हालत है ? यहाँ तो आज छोटी-छोटी बात के लिए भी दिमाग में हिंसा भर जाती है। प्रांत-पुनर्रचना जैसे छोटे-से मसले पर कितनी हिंसा हुई ? लोग समझते हैं कि हम अच्छे काम के लिए हिंसा कर रहे हैं ! सन् '४२ में सत्याग्रहियों ने भी तोड़-फोड़ और आगजनी के कार्यक्रम उठा लिये थे। उनका अभ्यास लोगों को हो गया ! अब ज़रा भी असंतोष हुआ, तो उसे प्रकट करने का यही साधन मान लिया गया और छोटी-छोटी हिंसाएँ बढ़ने लगीं। उन्हें दबाने के लिए फिर गोलियाँ चलीं, तो काँग्रेस की ओर से उसका बचाव होता है ! गोली का अगर बचाव होता है, तो फिर गांधीजी ने जन्म लेकर किया ही क्या ? बचाव तो पुराने जमाने से होते ही आया है ! हिंसा के बचाव का तो फिर कोई अंत ही नहीं आयेगा ! एक मोहजाल में हम फँस गये और समझते हैं कि देश की जिम्मेवारी हम पर ही है !

> ···दरिद्रनारायण का जाजूजी को सतत ध्यान रहा। उनकी विरक्ति और शांति अत्यंत प्रकट थी। भक्ति गुप्त थी, उस पर काबू रखने वाले वे योगी थे; लेकिन अंत में भक्ति ने भी उन पर काबू पा लिया !
>
> पर उनका सबसे श्रेष्ठ गुण सत्य-निष्ठा था। सत्य की खोज में वे उत्तरोत्तर गहराई में पैठते गये। इन पिछले वर्षों में उनका जीवन अक्षरशः ईश्वरमय हो गया था।
>
> —विनोबा

भेड़ क्या भेड़ ही बने रहें ?

आयसन होवर भी समझते हैं–दुनिया की ज़िम्मेवारी उन्हीं पर है ! लोग क्या समझते हैं ? यही कि 'हम भेड़ हैं और हमारी रक्षा के लिए हमें गडरिये चुनने चाहिए।' पहले गडरिये को चुनते नहीं थे। वे ही चार्ज ले लेते थे, सो राजा-महाराजा का जमाना तो गया और गडरियों को चुनने का जमाना अब आया। भेड़ों को चुनने का हक अब मिल गया है ! अभी 'आइक्' ने कहा, 'विरोधी उम्मीदवार यह क्या कह रहे हैं कि बमों के टेस्ट की जरूरत नहीं ! देश की रक्षा के लिए तो उसकी जरूरत ही है। बेवकूफ हो, जो सोचते नहीं। दुनिया पर इसका क्या असर होगा, कम्यूनिस्टों पर क्या असर होगा ? यह तो ऐसा विषय है कि इसमें सब पार्टियों को एक-राय होना चाहिए। इलेक्शन के लिए ऐसा निर्विवाद विषय क्यों उठाया गया ?' ऐसा कह कर वे अपने को ही चुनने के लिए कहते हैं। हिंदुस्तान में भी इसी तरह अगले साल गड़रियों का चुनाव होने वाला है ! पर सवाल यह है कि भेड़ कब तक भेड़ ही बने रहेंगे ? पहले राजा लोग जनता का नसीब तय करते थे, आज चंद राज्य-कर्ता तय करते हैं ! तो पहले भी अकबर जैसे अच्छे बादशाह थे ही। भेड़ों का नसीब अच्छा रहा, तो अच्छा बादशाह मिला, खराब रहा, तो औरंगजेब जैसा बुरा बादशाह मिला; लोग भेड़ के भेड़ ही बने रहे। आज भी यही हालत है। लोकमत का कोई सवाल ही नहीं है। 'वेलफेअर स्टेट्' के नाम पर सरकार सारी चीजें हाथ में ले रही है। माँ बच्चे को पकड़ कर दूध पिलाती है, उसका कल्याण चाहती है। उसी तरह की यह "वेलफेअर" स्टेट् है, "इल फेअर" स्टेट् नहीं है। लेकिन यह 'वेलफेअर' स्टेट् भी खतरनाक है, क्योंकि अच्छे लोग हों, तो अच्छा राज चलेगा; बुरे हों, तो बुरा। कहते हैं कि पाँच साल की चुनाव की मियाद उनकी अच्छाई-बुराई देखने के लिए रखी गयी है।

लेकिन लोकशाही में सरकार न अधम हो सकती है, न उत्तम; वह डेअरी के दूध के जैसी–औसत राज्य-व्यवस्था होती है। राजाशाही के समान तानाशाही अधम भी हो सकती है, उत्तम भी, लेकिन लोकशाही मध्यम हो सकती है; क्योंकि उसमें सबकी राय लेनी होती है। लेकिन लोगों के सोचने का स्तर ही नीचा हो, तो लोकशाही भी अधमतर बन सकती है। जाहिर है कि आज मूर्खों की संख्या ज्यादा है, इसलिए आज जो बहुसंख्या का राज माना जाता है, वह मूर्खों का ही राज माना जायेगा।

> पैसे का यदि संचय होता रहा, तो सबकी दृष्टि खराब हो जाती है और परिणाम बुरे निकलते हैं। पड़े हुए पैसे का ह्रास अपने आप होने लगता है, संचय करने वाले के पल्ले केवल पश्चात्ताप ही पड़ता है। भोग और दान में उसका उपयोग श्रेयस्कर होगा, लेकिन भोग से हम नीचे गिरेंगे, अतः दान ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी यज्ञ, दान, तप और कर्म का आचरण जरूरी है। —श्रीकृष्णदास जाजू

तो इसका उपाय क्या है ? क्या अल्पसंख्या के हाथ में सत्ता दे दी जाय ? नहीं, सत्ता लोगों के हाथ में आये; वह बँट जाय और केंद्र के पास बहुत कम सत्ता रहे। नैतिक सलाह देने भर का अधिकार उसको रहे। अगर आप 'वर्ल्ड गवर्नमेंट बनायें' तो क्या 'वर्ल्ड वेलफेअर बोर्ड' आदि बनायेंगे या 'वर्ल्ड प्लानिंग बॉडी' बनायेंगे या सत्ता का ऐसा ही केंद्रीकरण कर डालेंगे ?

एक ही आदमी के हाथ में इतनी सत्ता रहे और आईक्-बुल्गानीन चाहें तो दुनिया को आग लगा दे, चाहें तो शांति बनाये रखें, यह बड़ी भयानक हालत है। लोग अगर इस विचार को समझ जायेंगे, तो सारी राज्य-व्यवस्था को एक दिन में वे नीचे गिरा देंगे और शासनमुक्त समाज की निर्मिती होगी। उसके बिना शांति असंभव है।

(लक्ष्मीनायकन् पालयम, कोइंबतूर, ७-१०-५६)

www.vinoba.in

श्रद्धेय जाजूजी का पुण्यस्मरण

(दामोदरदास मूंदड़ा)

नमक-सत्याग्रह का जमाना था। जाजूजी खादी-काम के सिलसिले में हैदराबाद आये हुए थे। नवयुवकों से राजनैतिक वार्तालाप हो रहा था :

"हम लोग हैदराबाद में सत्याग्रह क्यों न शुरू कर दें ?"

"नहीं, आपको यहाँ खादी, स्वदेशी आदि रचनात्मक कार्य पहले करने चाहिए। गांधीजी ने रियासतों के लिए अभी सत्याग्रह की मनाही की है।"

"लेकिन हमारे यहाँ जुल्म कम नहीं है। हम लोग सत्याग्रह के लिए अधीर हैं।"

"लेकिन सत्याग्रह के पहले उधर काफी समय तक रचनात्मक काम किया गया है। लोगों को अपनी ताक़त का अहसास हुआ है। यहाँ तो अभी कोई रचनात्मक काम हुआ ही नहीं।"

"आप सत्याग्रह की इजाजत क्या नहीं ही देंगे ?

"इजाजत, बे-इजाजत का सवाल नहीं है। सत्याग्रह यहाँ इस समय किया जा सके, ऐसी परिस्थिति नहीं है।"

नवयुवक बेचैन हुए। हैदराबाद में और बाहर भी लोग सोचते कि 'जाजूजी तो बिलकुल प्रतिक्रियावादी हैं। हम लोगों के उत्साह पर इस तरह पानी नहीं फेरा जा सकता। देश में जब आग लगी हो, तब हमसे खादी बेचने के लिए कहा जाता है ! हमारी मीटिंगों के लिए खादी-भंडार वाले सहयोग नहीं देते, टेबुलों पर बिछाने के लिए चादर माँगी जाती है, तो भंडार वाले जाजूजी का नाम लेकर इन्कार कर देते हैं और जाजूजी भी उनको रक्षण देते हैं', आदि।

लेकिन कुछ समय बीता न बीता कि हैदराबाद-सरकार ने रियासत में काँग्रेस की स्थापना करने की मनाही कर दी, तो श्री रामकृष्णजी धूत, जो अब तक केवल सामाजिक और रचनात्मक कामों में ही भाग लेते रहे थे, जाजूजी की सलाह लेने के लिए वर्धा आये। उन्हीं जाजूजी ने उनको सलाह दी :

"सत्याग्रह के सिवा कोई मार्ग ही नहीं है और आपको इसमें कूद पड़ना है। भगवान् जो भी करेंगे, कल्याणकारी ही होगा।"

९ अगस्त १९४२ की घटना है। गांधी चौक में उस रोज मेला जुटा था। नागपुर भंडार का फोन आया। जाजूजी से भंडारवालों ने पूछा—"हमें क्या नीति रखनी है ? आन्दोलन में शरीक होना है या अलग रहना है ?" उत्तर : "अलग रहने का सवाल ही क्या है ? पूरी ताकत से आंदोलन में कूद पड़ना है।"

"सरकार भंडार को नहीं रहने देगी।"

"उसके लिए चिंता नहीं।"

"लाखों रुपयों का माल जो पड़ा है।"

"इस आहुति के लिए ही तो पड़ा है !"

ठीक समय की राह देख कर वह क्षण आते ही पीछे कदम न हटाना और न हटाने देना ही विवेक के धनी जाजूजी का शील रहा।

क्रांतदर्शी

परदा-निवारण के कारण माता-पिता बहुत नाराज थे। चाहते थे कि पुत्र-वधू पुनः घूँघट लेना शुरू करे, अन्यथा वे प्राण दे देंगे !

"घूँघट किस भावना से छोड़ा है ?"

"इसलिए कि वह मानवता के खिलाफ है, नागरिकता के विरुद्ध है ! इसमें स्त्री का तो अपमान है ही, पुरुष का भी है। घूँघट की नींव अविश्वास और भय पर है।

"फिर क्या सोचा है ?"

"यही पूछने आया हूँ। माता-पिता तो प्राण-त्याग की बात करते हैं।"

"तुम्हारी स्त्री क्या कहती है ?"

"वह अब किसी भी परिस्थिति में पुनः घूँघट करने को तैयार नहीं है।"

"तुम्हें क्यों कमजोरी है ?"

"कमजोरी नहीं, पर यदि माता-पिता ने सचमुच कूआँ-बावली कर ली, तो सुधार तो एक तरफ ही रह जावेगा, किंतु मुँह में कालिख जरूर लग जावेगी।"

"कालिख नहीं लगेगी। भूलते हो। धर्म-पालन में यह सब सहना ही होता है।"

"लेकिन माता-पिता ने कुछ कर लिया तो ?"

"तो समझो कि पृथ्वी का उतना बोझ हलका हुआ।"

ठीक तो कहा है : यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्ण कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्म योनिम्।
तदां विद्वान् पुण्य पापं विधूय निरंजनः परमं साम्य मुपैती।

उन दिनों श्री कृष्णदास गांधी बिलकुल नये-नये वर्धा आये थे। महाराष्ट्र चरखा-संघ में जाजूजी के पास उनको काम मिला। भंडारों में स्टाक लेने के लिए उन्हें भेजा जाता। भंडार-व्यवस्थापकों की जो भूलें होतीं, उनकी ओर कृष्णदास भाई जाजूजी का ध्यान खींचा करते। इस प्रक्रिया में कभी-कभी पहले के स्टाक जाँचने वालों की भी भूलें निकल आतीं। कृष्णदास भाई इसकी ओर भी जाजूजी का ध्यान आकर्षित करते। जाजूजी के बारे में अक्सर यह मान्यता थी कि वे कठोर अनुशासन-प्रिय हैं, भूलों को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

लेकिन यहाँ तो कृष्णदास भाई की ही कसौटी का समय आया। कृष्णदास भाई ने देखा कि मैं आलोचना करता हूँ, सुझाव देता हूँ तो जाजूजी पसंद नहीं करते, उन्हें दुःख होता है। यहाँ तक कि उन्हें मेरी सद्भावना में भी संदेह हो जाता है ! कृष्णदास भाई ने तीन वर्ष मौन रखा। जो काम जाजूजी ने बताये, निरलस भाव से किये, लेकिन अपनी ओर से कोई सुझाव नहीं दिया। जाजूजी को जब कृष्णदास भाई की योग्यता और सद्भावना के बारे में विश्वास हो गया, तो आग्रह-पूर्वक उन्हें चरखा-संघ के मंत्रीपद का ही भार सौंप दिया। कृष्णदास भाई और जाजूजी, दोनों ही पारस्परिक नियम्य और नियामक-योग्यता के कारण सुवर्ण की तरह सुशोभित हुए। आजकल युवक लोग अक्सर बुजुर्ग कार्यकर्ताओं के प्रति असन्तोष प्रकट किया करते हैं। विनोबा उन्हें कृष्णदास भाई का उदाहरण देकर पूछते हैं, अगर कृष्णदास भाई जाजूजी का विश्वास प्राप्त कर सके और उनकी कृपा के भाजन बन सके, तो आप लोग अपने से बड़ों का प्रमाण-पत्र क्यों नहीं प्राप्त कर सकते ?

खरे-प्रकरण के बाद मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री-पद के लिए योग्य व्यक्ति की खोज शुरू हुई। सरदार और जमनालालजी की बात हुई। 'जाजूजी ही इस समय प्रांत को संभाल सकते हैं।' सब एकमत हुए। परन्तु जाजूजी को दोनों खूब जानते थे। उन्हें मालूम था कि यदि जाजूजी हाँ भर दें, तो एक चमत्कार ही हुआ। लेकिन सरदार की आंतरिक इच्छा थी कि जाजूजी ही मान जायँ। भोजन के बाद सरदार ने बात छेड़ी। वे मौन रहे ! कुछ क्षण ऐसे ही अत्यंत नीरव बीते होंगे कि सरदार ने उद्गार प्रकट किये—"तो मैं मानता हूँ कि आपने हमारा आग्रह मान लिया!"

"मुझे आप क्षमा करेंगे। मुझसे यह नहीं बनेगा।"

संकट से बचाने के लिए द्रौपदी ने भगवान् को जितना याद नहीं किया होगा, उतनी लाचारी से, किंतु दृढ़तापूर्वक जाजूजी के उद्गार प्रकट हुए !

उस दिन जाजूजी किसी काम से नागपुर गये थे। वहीं खबर मिली कि जमना-लालजी नहीं रहे ! लौटे, तब तक तो ज्वालाओं के रूप में जमनालालजी का पार्थिव आसमान में ऊँचा-ऊँचा चढ़ा जा रहा था ! जाजूजी चुपचाप आकर समुदाय में बैठ गये। कितनी देर अग्नि-शिखाओं की ओर देखते रहे। गत तीस-बत्तीस वर्षों की मैत्री का विछोह देख रहे थे। अंतिम भेंट भी नहीं हो पायी थी। वशिष्ठ के रहते जनक ने कूच कर दिया था। हृदय में व्यथा नहीं समा सकी। चिता पर की एकाग्र दृष्टि किंचित् दाहिनी ओर मुड़ी, तो पास में इन पंक्तियों के लेखक को बैठा पाया और सहानुभूति ऐसी फूट पड़ी कि मानों बालक ही माता के चिर वियोग में आक्रांत हो ! उस आक्रोश में सारी करुणा साकार हो उठी। अनेकों की असहायता ही उस विदेही की आँखों से आँसू बन कर प्रकट हुई, सहानुभूति कृतार्थ हुई !

वकालत की परीक्षा में कलकत्ता-विद्यापीठ में वे सर्वप्रथम आये थे। अपने प्रांत के सर्वश्रेष्ठ वकीलों में उनकी गणना थी। लेकिन बापूजी के आवाहन पर वकालत छोड़ कर रचनात्मक कामों में उन्होंने अपना जीवन दे दिया और जब-जब मौका आया, सत्याग्रह-आंदोलन में अपनी आहुति भी दी।

भूदान-आरोहण का क्रांतिकारी स्वरूप चीन्ह कर वे उसमें भी कूद पड़े और जब सम्पत्तिदान-आंदोलन प्रारम्भ हुआ, तो उसका पूरा भार ही उठा लिया। "करेंगे या मरेंगे" के संकल्प से ही उन्होंने भूदान-आरोहण में अपने को समर्पित कर दिया था। सबको मालूम है कि हार्निया का ऑपरेशन कराने के लिए वे इसीलिए प्रस्तुत हुए कि भूदान-यात्रा खंडित न हो और उस काम में बाधा न आये। वस्तुतः आत्मतत्त्व की अनुभूति के व्यापक प्रयोग के रूप में ही सम्पत्तिदान-यज्ञ का कार्य उन्होंने उठा लिया था। लेकिन किसको पता था कि सफल आपरेशन और सुधरते हुए स्वास्थ्य के बावजूद वे यों अचानक चले जायेंगे !

उनका स्मरण, वर्णन का विषय नहीं, प्रेरणा और चित्तशुद्धि के लिए आत्म-निरीक्षण का विषय है ! प्रथम श्राद्ध-दिवस के अवसर पर ये श्रद्धा के कुछ फूल उनकी उनकी पावन स्मृति के भेंट हैं।

विवेकी क्रांतदर्शी च नियामक निःस्पृही तथा, करुणामूर्ति जाजूजी, सर्वत्यागी नमोस्तुते।

www.vinoba.in

धर्मनिरपेक्षता से राज्य-निरपेक्षता की ओर

(काकासाहब कालेलकर)

पिछले दिनों अफ्रिका से लौटते समय मैं काहिरा में पत्रकारों के सम्मेलन में गया था। मिश्र में भी लोग भूमि की समस्या को हल करने में लगे हुए तो हैं, परंतु उनका ढंग पश्चिमी है और कठिनाई से पूर्ण भी। मैंने उन्हें सुझाया कि वे भारत आकर विनोबा के काम को देखें। वे संपादक लोग फिर भारतीय दूतावास में गये और इस 'महात्मा नम्बर दो' के संबंध में पूछने लगे। मैंने उन्हें भारत की समस्याएँ, भूदान और संत विनोबा के सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी।

इसी तरह टोकियो में भी भूदान की चर्चा करते हुए कुछ समाजवादी नेताओं से मैं मिला था। उन्होंने पूछा कि क्या हमें भी भारत में भूदान में वितरित की जाने वाली भूमि मिल सकती है? मैंने उन्हें बताया कि "जापान और भारत में, दोनों ही जगह जमीन कम है और आबादी अधिक है। भारत में अभी भूमि का यथोचित बँटवारा नहीं हुआ है, फिर भी आप हमारे मेहमान होंगे और आपको एक हिस्सा जमीन अवश्य मिलेगी। मैं "विश्व-बन्धुत्व" में नहीं, पर "विश्व-कुटुम्ब" में विश्वास करता हूँ। हम आपको जमीन दे सकते हैं, पर आपका हृदय साफ होना जरूरी है। आपके देश में होने वाले अल्पकालीन राजनैतिक परिवर्तनों के कारण आप पर विश्वास नहीं होता। यदि हम आपको जमीन दें, तो आप अधिक जमीन पर हक जमायेंगे। वामन ने तीन कदम में ही सारी दुनिया नाप ली। हम भारत से अभी विदेशियों को हटा चुके हैं, इसलिए हमें भय लगता है।" मैंने उनमें से एक आदमी को विनोबा के पास भी भेज दिया और विनोबाजी ने उससे जापानी भाषा भी सीखना आरंभ कर दी।*

जापान में लोगों ने मुझसे यह भी पूछा कि आपके यहाँ नेहरू के बाद कौन उतना योग्य व्यक्ति है, जो देश का प्रधानमंत्रीत्व सम्हाल सके। मैं बहुत पहले से यह देखता आया हूँ। पहले फिरोजशाह मेहता थे। तब हम सोचा करते थे कि ये सबसे अधिक योग्य नेता हैं, अब इनके बाद दूसरा कौन नेता होगा? फिर गोखले आये और तब तिलक, गांधी, नेहरू लगातार एक-न-एक नेता होते गये। यह तो लोगों की आदत होती है। वे हमेशा अंधेरे की बात करते आये हैं, पर मिला सदा प्रकाश ही।

शासनविहीन समाज की स्थापना

मैं तो कहता हूँ कि नेहरू के बाद शासन-विहीन समाज की स्थापना होगी। एक दिन मैंने एक सज्जन से चर्चा करते हुए कहा कि धर्म के कारण हम कुत्तों की तरह लड़ने लगे। वे कुत्तों की उपमा सुन कर चौंके। मैंने कहा, माफ कीजिये, मैंने कुत्तों से तुलना करके कुत्तों का ही अपमान किया है!

आज तो हमने धर्म-निरपेक्ष समाज की रचना की। कल शासन-निरपेक्ष समाज की रचना होगी। यह काम युग-परिवर्तन का है। इसके लिए हमें बड़ी तैयारी करनी होगी। हमारे लिए मानव मात्र समान होगा, सबके लिए भी वह समान होगा। तब हमारा ध्येय होगा—Reverence for life, Respects for personality—मैं जीव मात्र के लिए आदर चाहता हूँ, दया की भीख नहीं माँगता। मैं हर व्यक्ति के लिए उसके अनुकूल काम चाहता हूँ और चाहता हूँ, अच्छे काम के लिए हर आदमी को स्वतंत्रता मिले।

सर्वोदय : विश्वकुटुंब-भाव

सर्वोदय में मुख्य भावना विश्व-कुटुम्ब की है। यदि हम किसी भी प्राणी की भूख का ख्याल करते हैं, तो हम सर्वोदय की ओर बढ़े हैं, ऐसा मानना चाहिए। जब हम किसी व्यक्ति से जमीन लेकर विनोबा को देते हैं, तब वह व्यक्ति हमारा गुरु बनता है। हम केवल विनोबा के संदेश के वाहक हैं। हमारे पास शब्द मात्र हैं, पर उस दाता के पास कृति होती है और कृति हमेशा शब्द से महान् होती है। हमें उसकी जमीन के अलावा उसके शब्दों का भी उपयोग करना चाहिए। भूमिदाता से हम कहें कि भूमिदान के बाद अब उस दान के योग्य भी बनो और एक-दो गाँव हमारे साथ चलो। जब मैं गांधी-आश्रम में विद्यापीठ के संचालन के लिए लोगों से धन एकत्रित करता था, पैसे लेने के बाद भी मैं लोगों को धन्यवाद नहीं कहता था। मैं उनसे कहा करता था कि मैं आपके मुर्दा पड़े धन का सदुपयोग कर रहा हूँ। इसी तरह दाता को हम वास्तविक दाता बनायें, इसमें काम करके अपनी सेवाएँ देने के लिए भी उन्हें प्रेरित करें।

* श्री निमाई भाई, जो आजकल बंबई में बौद्ध-मिशन में हैं।

भूदान का रहस्य एक कुटुम्ब के निर्माण में है। हम सामाजिक प्राणी हैं। पर हम तभी सामाजिक जीवन पसंद करते हैं, जब कि समाज के लोग हमें प्यार करें। यदि हम दूसरों के लिए कुछ भी नहीं करेंगे, तो स्पष्ट है कि स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं होगा।

हमारे मन में आज यह भावना है कि हम अनाथ हैं, हमें 'नाथ' चाहिए। यह भावना समाज के लिए भयानक है। हमें राजा और धर्म वालों का राज्य नहीं चाहिए। राज्य राजा का नहीं, ईश्वर का भी नहीं, धर्म का राज्य चाहिए। ईश्वर का पहला अवतार सृष्टि है और दूसरा अवतार धर्म है। इसके अलावा सारे अवतार ढोंग हैं। गाँवों के हजारों देवता तो घूसखोर हो गये हैं। इन्हें घूस दो और इनसे अन्यायपूर्ण काम पूरे करा लो! ऐसे देवता की सेवा व्यक्तिगत मोक्ष के लिए भले अच्छी हो, पर समाज के लिए वह खतरनाक होगी। हम यह निश्चय कर लें कि हम कभी भी भगवान् से अन्यायपूर्ण प्रार्थना नहीं करेंगे। गाँव के लोग सीधे-सादे होते हैं, तो उनमें दुर्गुण के विचार जल्दी पहुँचते हैं। हम जब भी गाँव में जावें, तो हमारा व्यवहार बहुत ही विनम्र हो, पर हृदय में अन्याय के प्रति विद्रोह की आग हो। हम उस ईश्वर के उपासक हों, जो लोकन्याय का दाता हो। भूमि का दान माँगते समय आप विनोबा के प्रतिनिधि हैं, ऐसा लोग मानते हैं और चूँकि विनोबा धर्म का प्रचार करते हैं, इसलिए लोग यह मानते हैं कि उन्होंने धर्म के काम में जमीन दी। उस जमीन का वितरण भी ठीक होता है। इससे लेने वाले और देने वाले, दोनों के मन में बंधुत्व-भाव जाग्रत होता है। यह लाभ भूमिदान से भी अधिक महत्व का है। इस बन्धुत्व को व्यापक करना हमारा काम है।

दानी ग्रामों धर्म-मूर्ति बन कर बैठें!

हमें दान में जो ग्राम प्राप्त हो, हम उनमें "धर्म-मूर्ति" बन कर बैठें, पर तिलक-चंदन-माला आदि के द्वारा दिखावा न करें। दाढ़ी तो मेरी भी बढ़ी है, पर यह केवल कुछ सुविधा-असुविधा के ख्याल से है। वैसे तो जेब में माला भी पड़ी है! पर किसी दाढ़ी और चन्दन को देख कर मैं मान लेता हूँ कि यह जरूर ढोंगी है, नहीं तो मन साफ होने पर इन दिखावों की क्या जरूरत थी? अतः हम धर्म के सच्चे प्रतिनिधि ही बन कर ग्राम में बैठें तथा अहिंसा और प्रेम के मार्ग से समाज-क्रांति करें।

भूमिदान के काम के लिए पैदल चलना आवश्यक है। पैदल चलने में पवित्रता रहती है और वाहन से व्यक्तित्त्व क्षीण पड़ता है। वाहन से, मुझे लगता है कि, मैं कुछ भ्रष्ट हो गया हूँ! पहले मैं भी हजारों मील पैदल चला हूँ। पैदल चलने मात्र से मुझे अपने आपमें पवित्रता का अनुभव होता था। मनुष्य गृहस्थ, ग्रामस्थ और देशस्थ तो बने, पर स्थावर न बने, इसलिए ईश्वर ने हमें दो पैर दिये हैं। जो पैदल चलता है, उसका जीवन पग-पग पर पवित्र होता है।

सर्वोदय की बुनियाद में ही कृति है। याने जिस काम को हम कर सकते हैं, उसे शब्दों से न कहना।

मन में अहं आते ही हम असामाजिक हो जाते हैं। हममें इतनी शक्ति हो कि हम असामाजिक न बनें। नैतिक परिवर्तन करके सामाजिक परिवर्तन का जिम्मा हमें जीवन के साथ मिल जाता है। हम सोचें कि किस तरह भेदभाव मिटेंगे। जब हम ग्रामों को परिवार के रूप में बदल देंगे, तब उसमें इस वर्तमान शासन की जरूरत ही नहीं रहेगी। पर शासनविहीन का अर्थ व्यवस्थाहीन राज्य नहीं होता—व्यवस्था तो होगी ही। पर इस संरक्षण में संरक्षित व्यक्ति के सम्मान का ध्यान अवश्य रखा जाता था।

ग्रामदान देने वाले लोगों के मन में सत्ययुग की कल्पना होती है। हम इस भावना की कद्र करें, उसे विकसित होने का अवसर दें। ग्रामदान के बाद ग्राम-निर्माण का भी गंभीर चिंतन हो, उसके निर्माण की योजना की हम रूप-रेखा बनायें।

हम स्वतंत्र रहना चाहते हैं। हमें व्यवस्था तो चाहिए, पर वह "स्व" की हो। वह किसी दूसरे व्यक्ति का तंत्र न हो। हम पहले धर्म के झगड़ों से ऊब गये थे। तब धर्म-निरपेक्ष राज्य की स्थापना हुई। आज भी हम राजनीति के वादों के झगड़ों से परेशान हो गये हैं, अतः अब निश्चित ही नया समाज इन राजनीतिक संघर्षों से बना हुआ नहीं होगा।

"समाज-हित" की दृष्टि से मैं ये विचार आपके सामने रख रहा हूँ।*

* म. भा. भूदान-समिति द्वारा आयोजित ग्वालियर नगर-संपत्तिदान-यात्रा के अवसर पर, ता० १९ अगस्त '५६ को दिया गया उद्घाटन-भाषण—सं०।

www.vinoba.in

भूदान, भारत और स्वेज़

(सुरेशराम भाई)

पश्चिम के और विशेषकर अमरीका के लोगों को इस बात पर बड़ा अचम्भा होता है कि हिन्दुस्तान में एक व्यक्ति ऐसा विचित्र है कि जिसके पास न तो कोई कानूनी ताकत है, न कोई फौजी सत्ता, लेकिन वह लाखों एकड़ जमीन जमा करता फिरता है ! इससे भी ज्यादा हैरत उन्हें यह होती है कि अपने निज के लिए वह एक इंच जमीन भी नहीं रखता ! इसलिए जब कभी वे हिन्दुस्तान आते हैं, तो उस अनोखे व्यक्ति से मिलने की और इस अनहोनी घटना को समझने की कोशिश करते हैं। ऐसा ही एक समझदार, जिज्ञासु, जवान अमरीकन दर्शक संत विनोबा से सितंबर की ता० २२ को मिला। विनोबा का पड़ाव मद्रास राज्य के कोइम्बतूर जिले से दूर एक छोटे-से गाँव में था।

उसका पहला सवाल था कि अपने जीवन में सबसे ज्यादा यश आपने किस चीज़ में कमाया है ?

विनोबा मुस्कराये और बोले : "कोई यश की बात ही नहीं है। केवल प्रयास और प्रयत्न है। अगर कुछ काम हुआ है, तो वह मेरा कर्तृत्व नहीं है। सब कुछ उस मालिक का है। और मेरा ख्याल है कि यह कहा जा सकता है कि चार-पाँच बरस पहले हमारे कार्यकर्ताओं को यह विश्वास नहीं होता था कि वे सर्वोदय-समाज की रचना कर सकेंगे। लेकिन अब उन्हें यह चीज सम्भव महसूस होती है। इस आन्दोलन के कारण वातावरण में फर्क पड़ा है। अगर आप किसीको यश देना चाहते ही हैं, तो महात्मा गांधी की स्मृति को वह देना होगा।

यह सुन कर नवयुवक तो दंग रह गया। पर विनोबा का प्रवाह जारी था—मुझे तो साफ दीखता है कि मृत्यु के बाद भी गांधीजी काम कर रहे हैं। वे गये नहीं, हमारे बीच में ही मौजूद हैं !

उस अमरीकी मित्र को अपने जीवन में शायद ही कभी ऐसा नम्र और त्यागी पुरुष मिला हो। वह एकदम चकित रह गया। लेकिन विनोबा आगे बढ़े और उसका दूसरा सवाल लिया। इस सवाल में दो शंकाएँ रखी गयी थीं : (१) भूदान के कारण लोगों में राष्ट्रीय पैमाने पर गुनाह की भावना पैदा होना, (२) आन्दोलन का विस्तार होने पर भूदान पर जोर कम पड़ जाना।

पहला हिस्सा विनोबा पूरी तरह नहीं समझ पाये। अमरीकी मित्र ने कहा कि "श्रीमान लोगों में शरम-सी पैदा होती है।" तब विनोबा ने सिर हिलाते हुए कहा, "शरम भी एक तरह का ज्ञान है। बिना ज्ञान के शरम पैदा हो ही नहीं सकती। जो लोग शरम की वजह से दान देते हैं, वे इस ख्याल से देते हैं कि देना ही चाहिए, देना उनका कर्तव्य है।" फिर विनोबा ने पूछा कि "अगर कुछ लोग शरम की वजह से कुछ काम करते हैं, तो इसमें हरज क्या है?"

दूसरे हिस्से के बारे में विनोबा ने कहा कि "कभी-कभी ऐसा जरूर होता है। फल और फूल आने पर बीज का लोप हो जाता है ! बात यह है कि भूदान के ऊपर कम जोर दिया जाता मालूम होता है, लेकिन असल में एक अत्यन्त ऊँची चीज का आविर्भाव हो रहा है।"

"आजकल आप कितनी सारी चीजें माँगा करते हैं—ग्रामदान, सम्पत्तिदान, इत्यादि।"—प्रश्नकर्ता ने अपना दर्द सुनाया।

"तो इसमें नुकसान तो कुछ है ही नहीं। आप जब बीज बोते हैं, तो फूल और फल निकलते हैं। बीज दीखता जरूर नहीं है, लेकिन वह व्यर्थ तो नहीं गया ? बीज की एकता की नाप नहीं होती—नाना प्रकार के रूपों में वह प्रकट होता रहता है।" फिर मुस्कराते हुए विनोबा ने कहा कि "जब तक हम हवाई जहाज में नहीं घूमते हैं, आप इतमीनान रखिये कि भूदान का ही काम चल रहा है।" यह सुन कर सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

इसके बाद हमारे मित्र ने पूछा कि क्या आप जयप्रकाश बाबू के इस वक्तव्य से सहमत हैं कि सर्वोदय के द्वारा हम सम्पत्ति के सामाजिक स्वामित्व के आधार पर नयी सभ्यता की रचना करना चाहते हैं ? विनोबा ने कहा : "जयप्रकाश बाबू आज-कल की आम भाषा में बोलते हैं। मैं उस चीज़ को उन शब्दों में नहीं रखूँगा। लेकिन जो बात वे कह रहे हैं, ठीक तो है। मेरी दृष्टि में समाज और व्यक्ति के हितों में कोई अपवाद ही नहीं है। सर्वोदय के अन्दर व्यक्ति और समाज में द्वन्द्व नहीं चलता। मेरा कहना यह है कि अगर हम समाज के प्रति अपना समर्पण कर दें, तो हमारा अपना हित आपसे आप सध जाता है और समाज का हित इसीमें है कि व्यक्ति को विकास का पूरा-पूरा मौका दे।"

"तो क्या आप कुल निजी सम्पत्ति को खत्म कर देना चाहते हैं ?"

"इसका जवाब इस बात पर निर्भर है कि निजी सम्पत्ति के आप क्या माने लगाते हैं। मैं निजी संपत्ति के अंत की बजाय निजी सम्पत्ति की भावना का अंत चाहता हूँ।"

निजी स्वामित्व-विसर्जन के मानी

"आपकी बातें समझना बहुत मुश्किल होता जा रहा है।"

"मिसाल के तौर पर मेरा शरीर है। मुझे यह भान नहीं होना चाहिए कि यह शरीर केवल मेरे लिए है, बल्कि यह कि यह सारे समाज के लिए है। लेकिन शरीर का विकास मेरी जिम्मेदारी है। कहने भर के यह लिए मेरी निजी सम्पत्ति है। यह शरीर मेरे अपने भोग के लिए नहीं है। इस तरह मेरी कोशिश यह है कि लोगों में यह विचार बैठे कि निजी सम्पत्ति मेरी नहीं, हमारी है।"

थोड़ी देर रुक कर विनोबा ने कहा कि "बाईबिल में कहा है कि धन्य वे हैं, जो गरीब हैं। उसीमें एक दूसरी जगह यह कहा है कि धन्य वे हैं, जो भावना में गरीब हैं। 'गरीब' और 'भावना में गरीब' का भेद आपने देखा। इसी तरह मैं भी भावना-रूप से निजी सम्पत्ति का अन्त चाहता हूँ।"

हमारे मित्र का माथा ठनका। इतनी गूढ़ चर्चा से मानो घबड़ा कर उन्होंने स्पष्टीकरण के लिए एक सवाल पूछा कि क्या मैं अपनी मोटर रख सकता हूँ ?

"जरूर रख सकते हैं। आप रखें, मगर समाज के उपयोग के लिए। आप खाना खा सकते हैं, बशर्ते कि आप हमारे लिए जी रहे हैं। आपके विकास में समाज का हित है और इसके इन्चार्ज आप ही हैं। इसलिए आप मोटरगाड़ी रख सकते हैं।"

अमरीकी पत्रकार का डर अब निकल गया। लेकिन उन्हें यह शंका हो रही थी कि पाँच करोड़ एकड़ के लक्ष्य का क्या होगा। इसलिए उन्होंने पूछा कि "अगर १९५७ के अंत तक यह लक्ष्य सिद्ध नहीं हुआ, तब आप क्या करेंगे ?"

"मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहना है, क्योंकि मुझे यही पता नहीं कि १९५७ के अंत तक मैं रहूँगा भी या नहीं ! लेकिन मेरे मन में कोई शंका नहीं है। पाँच करोड़ एकड़ का तो कोई लक्ष्य ही नहीं है—यह तो केवल पहला कदम है। मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान की सारी जमीन एक दिन में बाँटी जा सकती है—अगर हम उसके लिए ठीक से हवा तैयार कर लें।

"आप लोग क्रिसमस का त्योहार एक दिन में चला लेते हैं। यहाँ भारत में दीवाली एक ही दिन में मनायी जाती है। इसी तरह से कुल भूमि का बँट-वारा भी एक दिन में हो सकता है। एक तारीख नियत कर दी जायेगी और उस तारीख को हर गाँव के लोग ऐलान कर देंगे कि अब जमीन की मालकियत गाँव की रहेगी।... यह सब हो सकता है—अगर इसके लायक वातावरण हम पैदा कर सकें।"

अमरीकन बन्धु को अब एक ही चीज परेशान कर रही थी—विश्वशान्ति कैसे होगी ? और यह सवाल आज दुनिया का सबसे खास और बड़ा सवाल है। इसलिए हमारे मित्र ने भी जानना चाहा कि विश्व-शान्ति के लिए भूदान क्या कर रहा है।

विनोबा ने कहा कि "भूदान का हर दान-पत्र विश्वशान्ति के लिए वोट है। मेरा मानना है कि विश्व-शान्ति के लिए यह आन्दोलन जो कर रहा है, वह दुनिया में कहीं भी नहीं हो रहा है। हमारी कोशिश समाज की बुनियाद ही बद-लने की है। सर्वोदय पहले भारत सरकार और भारत समाज को बदलेगा। उसके द्वारा वह दुनिया में परिवर्तन करेगा। इसलिए बाहर से देखने में हम राष्ट्रीय कार्य ही कर रहे हैं, लेकिन पूरे अर्थ में यह अंतर्राष्ट्रीय कार्य है।"

स्वेज की समस्या ?

इसे सुन कर हमारे मित्र को सहज जिज्ञासा हुई—और यह इस भेंट का सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल था—कि "क्या विशेष प्रश्नों, जैसे स्वेज के मामले में, सर्वोदय लागू होता है ?"

"होता है, जरूर होता है। मिस्र तो एक छोटा-सा देश है और उसके खिलाफ फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमरीका जैसे बड़े देश जुटे हैं। उनका कर्तव्य क्या है ? इन राष्ट्रों को क्या करना चाहिए ? मैं कहूँगा—विरोधी की बात फौरन मान लीजिये और बस खत्म ; सवाल हल है, क्योंकि सवाल आखिर है क्या ? राष्ट्रपति नासिर यह तो नहीं कहते कि स्वेज़ में दूसरे लोग आ-जा नहीं सकते। उसकी ईमानदारी पर विश्वास क्यों नहीं करते ? मेरे लिए तो यह कोई सवाल ही नहीं है। स्वेज का सवाल केवल हम्बग (humbug)—पाखंड है।"

www.vinoba.in

अंत में विनोबा ने कहा, "अगर मैं इग्लैण्ड या अमरीका का प्रतिनिधि होता, तो मैं तो नासिर की बात पर फौरन विश्वास कर लेता और देखता कि वह अपने वचन का पालन करता है या नहीं। स्वेज सबके लिए खुली रखता है या नहीं। हमें सब्र रखना चाहिए। बड़े राष्ट्र के नाते क्या हममें इतनी ताकत नहीं है कि मिस्री राष्ट्रपति को कसौटी पर कसें कि वह अपने वचन पर टिकता है या नहीं?"

समारंभ के साथ शुभारंभ भी—

(वल्लभस्वामी)

एक बार सेवाग्राम में ज़ाकिर हुसेन साहब ने बापू के उस आसन की ओर लक्ष्य करके, जो वहाँ की प्रार्थना-भूमि में सदा रखा जाता है, कहा : "यहाँ जो आसन दिखाई पड़ता है, वही गांधीजी का उपदेश दे रहा है। और कहने की क्या जरूरत है? यह शहादत का, बलिदान का आसन है। यह हमको याद दिलाता है कि हमको क्या करना है। बापू का जन्म-दिन हम तभी मना सकते हैं, जब कि हम अपने दिल के अन्दर बलिदान की भावना ला सकें। हमने थोड़ी इधर-उधर सभाएँ कर लीं, भाषण दे दिया और उतने से संतोष कर लिया, तो इसको जयंती मनाना नहीं कहेंगे। गांधीजी के जीवन में बलिदान की सीढ़ी ऊपर-ऊपर ही चढ़ती गयी है। आखिर में दिल्ली में उन्होंने अपनी देह की तक बलि चढ़ा दी।"

जैसे वटवृक्ष के छोटे-से बीज से वृक्ष फैलता है, उसी तरह गांधीजी ने जो बीज बोया था, उसीमें से स्वराज्य निकला और उसीमें से अब सर्वोदय निकला। यह शब्द आज सारी दुनिया में फैल गया है। जैसे हीरा जमीन के अंदर छिपा रहता है, वैसे इस 'सर्वोदय' शब्द की कल्पना कितने ही महापुरुषों के हृदय में पड़ी रही होगी, लेकिन गांधीजी ने उसको खोज निकाला और उसके आचार का रास्ता बताया और विनोबा अपने दान-यज्ञों द्वारा उसे आगे बढ़ा रहे हैं। रस्किन की पुस्तक "अन्टु दिस् लास्ट" में एक बाइबिल-कथा है :

"एक बागवान था। उसके यहाँ कुछ मजदूर आठ बजे काम करने आये, कुछ बारह बजे आये, कुछ दो बजे, कुछ चार बजे आये। उसने सबको काम दिया। शाम को जब वे जाने लगे, तो बागवान ने सबको एक-सी ही मजदूरी दी। जो पहले आये थे, उन्होंने शिकायत की कि अरे, यह कैसा न्याय है? बागवान ने जवाब दिया कि आपसे जितना तय हुआ था, उतना मिला या नहीं?" याने क्राइस्ट इस कहानी के द्वारा यह कहना चाहते थे कि भगवान् के दरबार में कोई भेदभाव नहीं है, सभी बराबर हैं। इस कहानी के आधार पर ही हमें समाज-रचना करनी होगी। रस्किन ही पहला आदमी था, जिसने प्रचलित अर्थशास्त्र के खिलाफ बग़ावत की और कहा कि हमें सबको समान आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक प्रतिष्ठा देनी होगी।

सर्वोदय की विशेषताएँ

सर्वोदय-समाज है क्या? सर्वोदय याने सबका भला। आज तक दुनिया के लोगों ने जो सोचा है, वह टुकड़े करके सोचा है। जब सामंतशाही थी, उसमें एक आदमी का राज्य था। अब डेमोक्रसी आयी, जिसमें बहुमत से कारोबार चलता है। आज का नीति-शास्त्र भी "अधिक-से-अधिक लोगों के भले" की ही बात कहता है। महाभारत में कथा है :

"धर्मराज को कहा गया कि द्रोणाचार्य बलवान् है। उसको हम ऐसे जीत नहीं सकते। उपाय एक ही है कि यदि उसको यह मालूम हो जाय कि उसका लड़का अश्वत्थामा मारा गया, तो उसको दुख होगा, वह शस्त्र छोड़ देगा। इससे हजारों सिपाही बच जायेंगे।" "अधिक से अधिक लोगों की भलाई" की बात के चकमें में आकर धर्मराज ने भी कह दिया कि "अश्वत्थामा हतः।" कह तो दिया, लेकिन कभी झूठ बोला नहीं था, इसलिए अन्तरात्मा बगावत कर रही थी। उसके पीछे धीरे से जोड़ दिया—"नरो वा कुंजरो वा!"।

तो, अभी तक "अधिक से अधिक लोगों का भला हो," यहाँ तक ही दुनिया पहुँच सकी थी। गांधीजी ने कहा कि अधिक-से-अधिक लोगों का ही नहीं, "सबका" भला होना चाहिए। आज तक जो मानव-समाज दुनिया के टुकड़े करके सोचता था, उसके बजाय दुनिया को अखंड मान कर, सारी दुनिया को एक मान कर सोचना चाहिए, यह बात गांधीजी ने ही पहली बार रखी।

सर्वोदय की दूसरी विशेषता यह है कि साध्य अच्छा है, या नहीं, यह तो सर्वोदय देखता ही है, लेकिन वह साधन-शुद्धि का भी आग्रह रखता है। साध्य तो सबका अच्छा होता ही है। आज रूस भी कह रहा है कि दुनिया की भलाई हम चाहते हैं। अमेरिका भी कहता है कि हम सबकी भलाई चाहते हैं और उस भलाई के लिए दोनों एटम बम बना रहे हैं! उद्देश्य को पाने के लिए हमारे साधन कैसे हैं, इस पर लोगों ने अभी तक ध्यान नहीं दिया। गांधीजी ने कहा कि हमारे साध्य की शुद्धि के साथ-साथ हमारे साधन भी शुद्ध होने चाहिए। गांधीजी ने तो यहाँ तक कहा कि साध्य और साधन अभिन्न ही हैं।

तीसरी विशेषता सर्वोदय की यह है कि सर्वोदय का आरंभ अंत्योदय से होता है। याने जो सबसे नीचे है, उसकी सेवा से। एक भाई विनोबाजी के पास गये और पूछा कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के बारे में आपकी क्या राय है? उन्होंने सब आँकड़े पढ़ कर सुनाये कि खेती के लिए हम यह करेंगे, इतना शिक्षा के लिए करेंगे, इतना उद्योगों के लिए खर्च करेंगे, आदि। विनोबाजी ने सब सुन लिया और केवल एक ही सवाल पूछा कि आपकी द्वितीय पंचवार्षिक योजना में भंगियों का क्या सुधार होगा और जिनको रु० ५०) या रु० १००) मिलते हैं, उनको क्या लाभ होगा? वे भाई कहने लगे कि ये आँकड़े तो हमारे पास नहीं हैं। फिर उन्होंने प्लानिंग कमीशन को लिखा कि विनोबाजी जैसा चाहते हैं, वैसे आँकड़े निकाल कर भेजिये!

स्वामी विवेकानंद ने एक शब्द दिया—"दरिद्रनारायण।" उसका प्रचार और आचार गांधीजी ने किया, क्योंकि वे जानते थे कि सर्वोदय का आरंभ कहाँ से करना होता है। आज क्या होता है? पैदल चलने वाला सोचता है, देखो वह सायकल वाला कैसा चला जा रहा है? सायकल वाला मोटर वाले की ओर, मोटर-वाला विमान वाले की ओर देखता है, नीचे वाले की ओर कोई नहीं देखता है। गांधीजी की दृष्टि यह थी कि पैदल चलने वाला यह देखे कि मेरे पैरों में तो जूते हैं, बिना जूते वाला भी कोई है क्या? इसलिए गांधीजी ने कहा, "ईश्वर मुझे फिर से जन्म दे, तो भंगी के घर में जन्म दे," क्योंकि वह सबसे नीचा है। वे जानते थे कि सर्वोदय अंत्योदय से ही होगा। जवाहरलालजी के कहने के अनुसार हिन्दुस्तान में एक-दो समस्याएँ नहीं हैं, ३६ करोड़ समस्याएँ हैं। हमारी शक्ति सीमित है, इसलिए हमें बुनियादी काम लेना होगा। हमें अंत्योदय से शुरू करना होगा। इसीमें से यह भूदान निकला है। गांधीजी के जन्म के निमित्त यदि हमें कुछ करना है, तो वह यही है कि यह जो सर्वोदय का महा-यज्ञ, भूदान का, स्वराज्य के बाद शुरू हुआ है, उसमें हमको हिस्सा लेना चाहिए।

कार्यकर्ताओं से मैं कहूँगा कि समारंभ हम अपनी निष्ठा दृढ़ करने के लिए करते हैं। हम भले ही थोड़े हैं, लेकिन यह समझना चाहिए कि हमारा विचार सही है और हमारे ही रास्ते पर सारी दुनिया को आना है। मेरी तो यह निष्ठा है कि भले आज हम थोड़े हैं, लेकिन दुनिया को इसी रास्ते पर आना होगा। हम थोड़े हैं, तो हमें अपनी तपस्या और बढ़ानी होगी। इसकी एक रोचक कहानी है :

एक दफा वायु और सूरज में होड़ लगी कि कौन अधिक बलवान् है। एक आदमी चादर ओढ़े हुए जा रहा था। शर्त यह रखी कि जो इसकी चादर बदन से उतरवा दे, उसकी जीत हुई। वायु खूब जोरों से बहने लगी, उस आदमी की चादर भी उड़ने लगी। लेकिन ज्यों-ज्यों वह उड़ती जाती, त्यों-त्यों वह लपेटता जाता था। अन्त में वायु को हार खानी पड़ी। अब थोड़ी देर बाद सूरज की उष्णता बढ़ने लगी। उस आदमी से उष्णता सही न गयी, उसने चादर हटा दी।

तो हमारा आन्दोलन इस दूसरी भूमिका पर आया है। आन्दोलनों में हमेशा चढ़ाव-उतार आता है। स्वराज्य के आन्दोलन में यह हमने देखा है। हमको उस सूरज के समान अपनी तपस्या बढ़ानी होगी। हम थोड़े हैं, इस तरह से हमको नहीं सोचना है। हमारा विचार सही है या नहीं और हम उस विचार के अनुरूप चल रहे हैं या नहीं, यह हमें देखना है। अगर दुनिया को कोई बचाने का रास्ता है, तो गांधीजी का ही रास्ता है और इस रास्ते पर ही आज विनोबा चल रहे हैं। यह सर्वोदय का रास्ता, यह भूदान-यज्ञ का रास्ता ही एक ऐसा रास्ता है, जो दुनिया को बचा सकता है। दूसरे किसी रास्ते से दुनिया बच नहीं सकती है। चाहे वह ठोकर खाकर आये, लेकिन आना पड़ेगा इसी रास्ते पर।

कलकत्ता शहर की पदयात्रा के समारोप का भाषण, ता० २-१०-'५६।

---

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ
१९ अक्टूबर सन् १९५६

गरीबों की ताक़त कैसे बढ़ेगी

(वीनोबा)

हमने खेती के मजदूरों का सवाल हाथ में लीया, क्योंकी वे सबसे ज्यादा दुःखी और गीरे हुअे हैं। लेकीन हम शहर के मजदूरों का भी मसला हल करना चाहते हैं, क्योंकी भूदान-आंदोलन मजदूर-आंदोलन भी है।

मजदूरों की ताकत बने, अुनमें हीम्मत आये, तो अुनका मसला हल होगा। वह ताकत है, लेकीन अुसका अुनको भान नहीं है। जब अेक-दूसरे को मदद करना वे शुरू करेंगे, तब अुसका भान होगा और गरीब के द्वारा ही गरीब की चींता करने से नैतीक ताकत बनेगी, जीसका असर हम श्रीमानों पर डाल सकेंगे। गरीबों को मांगने की नहीं, देने की भी ताकत आनी चाहीअे। वे देश के लीअे, गरीब साथी के लीअे श्रमदान करेंगे, तो पुण्य-शक्ती पैदा होगी, अन्यथा आपस में लड़ने से वह खत्म हो जायगी। गरीबों को गरीबों की अीज्जत महसूस हो, तो श्रीमान भी अुसे महसूस करेंगे, लेकीन आज गरीब दीन, लाचार और शक्तीहीन बन गये हैं, आपस में लड़ने से अुनकी ताकत खत्म हुअी है।

पर अीतनी बड़ी यह मीटींग बता रही है की गरीब जागृत हो रहे हैं। अीसमें से अग्नी को प्रकट करना होगा—ठंढा अग्नी, जो कीसीको जलायेगा नहीं, सबको पावन करेगा। जलायेगा सबके दोषों को—गरीबों के, श्रीमानों के; स्वार्थीयों के दोषों को। अीस तरह नैतीक और धार्मीक अग्नी नीर्माण करना है। समाज में परस्पर जो अवीश्वास और अनादर है, अुससे अग्नी प्रकट नहीं होगा।

श्रीमानों में जो हृदय-हीन दीख पड़ते हैं, वे हृदयहीन नहीं होते हैं, बुद्धीवाले होते हैं। गरीबों की नैतीक ताकत देख कर वे टीक नहीं सकेंगे, अीसमें शामील हो जायेंगे। हृदय वाले तो शामील हो ही जायेंगे। तो, हमारा काम अैसा होना चाहीअे की वह हृदय-वालों के हृदय पर और बुद्धीवालों की बुद्धी पर असर कर सके, तभी अुनकी ताकत बनेगी। प्रवाह के आगे धनी टीक नहीं सकता। अीस तरह यह कार्य हृदयवान् और बुद्धीवान् है। पूछा जाता है की धनवालों का हृदय आप कैसे बदलेंगे, जब की अुन्हें हृदय ही नहीं है! पर बुद्धी तो है। हम बुद्धी का परीवर्तन करेंगे। प्रेम का कार्य है, अीसलीअे हृदय वाले आयेंगे और गरीबों की ताकत बनेगी, तो जमाने की हवा देख कर धनवाले साथ आयेंगे; अीसलीअे चींता धनीकों की नहीं है, गरीबों की है। वे दीन न बनें, परस्पर के प्रती त्याग-भाव और प्रेम-भाव हो, हृदय शुद्ध हो और अपने से जो और गरीब हैं, अुनकी वे मदद करें, तब अुनकी ताक़त बढ़ेगी।

सींगनल्लूर, कोअींबतूर, ३-१०-'५६

सर्वोदय की दृष्टि :

यातायात का प्रश्न

'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के ता० ६ सितम्बर के अंक में भोपाल की एक खबर छपी है :

"भोपाल और नये मध्यप्रदेश के दूर-दूर के जिलों के बीच शीघ्रगामी और भरोसे लायक आवागमन कायम रखने के लिए नयी मध्यप्रदेश की सरकार ने छोटे हवाई जहाजों का एक बेड़ा रखना तय किया है। यह समाचार उस राज्य के चीफ सेक्रेटरी ने इस सप्ताह एक मीटिंग में बताया। यातायात की सुविधा बढ़ाने के प्रश्न पर विचार करने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त एक उपसमिति इस बात पर गौर कर रही है कि जिलों के हेडक्वार्टर पर उन हवाई जहाजों के उतरने के लिए मैदान तैयार करने में क्या खर्च होगा ?

"मुल्क के इस हिस्से में बारिश के मौसम में सड़क द्वारा यातायात अक्सर बन्द हो जाता है, क्योंकि जगह-जगह पहाड़ी नालों के कारण रास्ते में पड़ने वाली रपटें (Causeways) पानी में डूब जाती हैं, जिससे सड़कों पर आवागमन बन्द हो जाता है।

"यातायात की इस बड़ी कमी की गम्भीरता का अनुभव उस दिन और भी स्पष्ट हुआ, जब श्रीमती इन्दिरा गांधी को यहाँ से सिर्फ पचास मील दूर आष्टा गाँव में १४ घंटे से ऊपर रुकना पड़ा। राज्य के तमाम साधन भी श्रीमती गांधी को वहाँ से थोडी दूर, सिहोर कस्बे में, जहाँ दस हजार से ऊपर लोग उनका स्वागत करने के लिए इन्तजार कर रहे थे, उस रात नहीं पहुँचा सके। जब 'पापनासा' नदी में उतार हुआ, तब दूसरे दिन वे भोपाल पहुँच सकीं।"

श्रीमती इन्दिरा गांधी को जो असुविधा हुई, उसका सबको अफसोस होगा। पर ईश्वर को धन्यवाद है कि इस कारण सरकार का ध्यान आवागमन की कमी और उसको पूरा करने की ओर तो गया। राज्य की उचित व्यवस्था के लिए या नेताओं के आवागमन की सुविधा के लिए हवाई जहाज खरीदे जायँ और हवाई अड्डे बनाये जायँ, तो उसके बारे में हमें कुछ नहीं कहना है। वह आवश्यक भी हो सकता है, पर इस "हवाई" इन्तजाम से आम जनता को, जिसका प्रतीक श्रीमती इन्दिरा गांधी का स्वागत करने के लिए इकट्ठा हुआ, दस हजार का वह जनसमुदाय था और जिन्हें रोज-ब-रोज अपने काम के लिए कितनी ही 'पापनासाओं और कर्मनासाओं' को पार करना पड़ता है, क्या सुविधा मिलेगी, यह विचारणीय है! हवाई सर्विस की व्यवस्था करने से पहले सार्वजनिक खजाने का उपयोग नदी-नालों पर खास-खास जगह पुल बनाने में किया जाता, तो आम लोगों को भी उसका फायदा मिलता और शायद वह शासनिक दृष्टि से भी बेहतर होता, क्योंकि हवाई जहाजों से तो सिर्फ मंत्रीगण, ऊँचे अफसर या नेतागण ही सफर कर सकेंगे, बाकी के अफ़सरों या सरकारी अमलों को तो फिर भी सड़क-मार्ग का ही उपयोग करना पड़ेगा!

जयपुर, ता० २८-९-'५६ —सिद्धराज

सुस्वागतम् !

उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री नवकृष्ण चौधुरी ने ता. १० अक्तूबर '५६ को अपने मुख्य मंत्री-पद से इस्तीफा दे दिया, जो सखेद स्वीकार भी कर लिया गया। साथ ही, उन्होंने काँग्रेस का चार आना-सदस्यत्व भी छोड़ दिया है।

अपने त्यागपत्र के कारणों का जिक्र करते हुए श्री नवबाबू ने जाहिर किया कि अब सारा ध्यान वे भूक्रांति और रचनात्मक काम की ओर ही लगाना चाहते हैं।

उड़ीसा का चौधुरी-परिवार बापू-युग की अपूर्व देन है। श्री गोपबाबू-रमादेवी एवं श्री नवबाबू–मालतीदेवी की सपरिवार तपस्या आज वहाँ के कण-कण में व्याप्त है। जिसने एक क्रांति-कार्य में हिस्सा लिया, वह सहसा दूसरी क्रांति में हिस्सा नहीं ले पाता, ऐसा आम तौर पर माना जाता है, परंतु चौधुरी-परिवार ने गांधीयुग की क्रांति में जिस तरह हिस्सा बँटाया, उससे शतगुना हिस्सा वह अब इस भूक्रांति में बँटा रहा है। घर का प्रत्येक सदस्य—पुत्र-पुत्रियाँ, पुत्रवधु, दामाद आदि सभी—इस काम में लगे हैं, लेकिन प्रत्येक का अपना व्यक्तित्व, अपना सेवाक्षेत्र और अपनी तपस्या है। उत्कल के बारह सौ ग्रामों के दान की कहानी का एक-एक अक्षर भी आज इसी चौधुरी-परिवार की कीर्ति-गाथा संजोये हुए है। अपनी सादगी, सेवा, त्याग, सरलता, प्रेम आदि से ओतप्रोत यह परिवार आज उड़ीसा के लिए ही नहीं, भारत के लिए भूषण बन गया है।

नवबाबू इसी क्रांतिकारी परिवार के एक प्रमुख सदस्य हैं। देश जानता है कि किस प्रकार उन्हें मुख्य मंत्रीत्व के लिए काँग्रेस हाईकमान्, उत्कल-विधान-सभा, उत्कल-काँग्रेस और उत्कल की जनता ने आग्रह किया—पूरा जोर डाला, लेकिन जगन्नाथपुरी में किया हुआ इस्तीफ़े का संकल्प उन्होंने अब पूरा कर लिया। पुरी में ही, जब कि सर्व-सेवा-संघ ने आवाहन किया था, नवबाबू ने इस संबंध में अपना विचार कर लिया

www.vinoba.in

था। मौजूदा पक्ष-पद्धति और केंद्रानुगामी राज्य-व्यवस्था के भी वे आलोचक हैं। उसके भीतर रह कर उसकी बुराई उन्होंने अच्छी तरह देख ली है। उड़ीसा की भूक्रांति उन्हें बार-बार उद्वेलित कर रही थी, परंतु पं० नेहरू के प्रेमाग्रह ने एवं प्रांत की जो जिम्मेवारी उन्होंने अपने ऊपर ली, उसे पूरी तरह निबाहने की भावना ने उन्हें अब तक रोक रखा था, यद्यपि वे छटपटा ही रहे थे। राज्य-नवरचना के इस अवसर पर उन्होंने आखिर बंधन-मुक्ति पा ली। आज वे भूक्रांति में पूरी ताकत से जुट रहे हैं, यद्यपि मुख्य मंत्री रहते हुए भी उन्होंने इसमें कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी थी।

भूदान-आंदोलन की प्रगति के इतिहास में इस घटना का विशेष महत्त्व है। भूदान आज नव-समाजरचना का बायस बन कर आगे बढ़ रहा है। ऐसे 'लोकनेता' राज्यबंधनों में और संस्था के बंधनों में इस समय फँस कर क्रांति-कार्य में शिथिलता नहीं आने देना चाहते। उड़ीसा की भूक्रांति ने, जो ग्रामदान के रूप में प्रकट हुई, ऐसे ही लोकनेता का आवाहन किया और उसीका जवाब नवबाबू का इस्तीफा है।

सारा सर्वोदय-परिवार इस क्रांतिकारी कदम को उठाने के समय उनका स्वागत किये बिना आज रह नहीं सकता।

काशी, ता० १३-१०-५६ —लक्ष्मीनारायण भारतीय

जिन हाथों ने हथियार बनाये—

(विनोबा)

शुद्ध बुद्धि से जप किया जाता है, तो उसकी बड़ी ताकत होती है। लोग जप की महिमा नहीं पहचानते। उससे तो सारी हवा ही बदल जाती है। 'हिंदुस्तान को स्वराज्य चाहिए, अंग्रेजों को यहाँ से जाना चाहिए', यह जोरदार जप शुरू हुआ। वह शुद्ध बुद्धि का जप था। वह व्यापक हुआ। इतने बड़े अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ हम लोगों ने जप किया, उनकी जेल में जाकर पड़े रहे। अब तक के तरीकों से एकदम भिन्न तरीका था यह। लेकिन हम आजाद हुए, क्योंकि वह शुद्ध बुद्धि का जप था। अब 'जमीन सबकी होनी चाहिए, निजी मालकियत किसीकी नहीं होनी चाहिए। जमीन पर काम करने का सबका कर्तव्य है,' यह बाबा का जप चला। इस पर लोग पूछते हैं; कि यह सब कब होगा, कैसे होगा? हम कहते हैं, "आप चाहें, तो इसी साल; और आप नहीं चाहे, तो सौ साल भी नहीं! सब आपकी और हमारी मर्जी पर निर्भर है।" सारी जमीन का बँटवारा भूदान-समिति नहीं, गाँववाले ही कर सकते हैं। क्या शादी के लिए कहीं शादी-समिति बनती है? घर-घर के लोग अपना इंतजाम कर लेते हैं। तमिलनाड का 'पोंगल', मलाबार का 'ओणम्' या हिंदुस्तान की दिवाली के लिए भी कोई कमेटी बनती है? लेकिन एक-एक दिन में ये जो सारे त्योहार मनाये जाते हैं, वैसे ही हम चाहें, तो एक दिन में जमीन का बँटवारा कर सकते हैं। उसके लिए भावना निर्माण करनी होगी। अंग्रेजों ने भारत छोड़ने की तारीख मुकर्रर की और चले गये। तैयारी में एक-दो साल लगे, लेकिन काम एक ही दिन में हुआ। मनुष्य दिनों तक नहीं मरता रहता है, क्षण में मरता है, भले तैयारी में सौ साल लगे। किसी गुफा में दस हजार साल का अंधकार भरा है। लेकिन लालटेन ले गये, प्रकाश पहुँचा और एक क्षण में अंधकार दूर हो गया। उसके लिए सौ-दो सौ साल नहीं लगे।

विचार की ज्योति सब कुछ करेगी

एक भाई सूर्यलोक में रहता था। रात को पृथ्वी पर गिर पड़ा। देखा, सारा कचरा ही कचरा पड़ा है! सूर्यलोक वाला होने के कारण उसे अंधकार मालूम ही नहीं था, इसलिए उसे काला कचरा ही दीख पड़ा। कुदाली लेकर खोद कर साफ करना उसने शुरू किया। टोकरियाँ भरकर वह कचरा फेंकता था। सोचता था, पृथ्वीवाले लोग क्या कचरे में रहते हैं? इतने में पड़ोसी जाग गया और तमाशा देखने आया कि रात को कौन खोद रहा है? लालटेन देख कर सूर्यलोक के मनुष्य को लगा— "अरे, मैं तो घंटों से कचरा फेंक रहा था, पर वह खत्म नहीं हुआ और अभी क्षण में कैसे खत्म हुआ?" पर वह कचरा था ही कहाँ, अंधकार ही था, खोद कर नहीं, प्रकाश के द्वारा ही वह हटने वाला था! तो भूदान से अभी हमने खोदना शुरू किया है। दानपत्र भरवा लेते हैं, लेकिन इस तरह खोदते-खोदते भूदान कब पूरा होगा? जब विचार का प्रकाश फैलेगा, तब न दानपत्र दिया जायगा, न लिया जायगा। लोग जाहिर कर देंगे कि हमें जमीन बाँटनी है; और वह बँट जायगी। विचार का प्रचार होना चाहिए। यही काम हम अब कर कर रहे हैं, यही जप चल रहा है। कचरा खोद कर फेंकने का काम चल रहा है। कितना कचरा फेंका? तो फलाँ जिले में दस हजार एकड़ मिले। पर अभी बहुत काम बचा है। तो यह सारा कब फेंका जायगा? लेकिन यह कचरा नहीं, अंधकार है। एक क्षण में प्रकाश फैलेगा और वह खत्म हो जायगा। हिंदुस्तान में जमीन बँट कर रहेगी, इसमें हमें संदेह ही नहीं। हमने जाहिर किया कि जमीन की मालकियत मिट जानी चाहिए। पहला कदम है, पाँच करोड़ एकड़ बाँटना। इस विचार को कोई ना नहीं कहता। जमीन बँटनी चाहिए, मालकियत हटनी चाहिए, इसका ३६ करोड़ लोग जप करें, तो एक शब्द से ही काम होगा। सृष्टि शब्द से उत्पन्न हुई है, ऐसा शास्त्र ने कहा है। मोह से जमीन न छूटती हो, तो मोह हटाने की योजना हम कर देंगे। परमेश्वर के पास वह है। लेकिन पहले हिंदुस्तान इतना कबूल कर ले कि मालकियत गलत है, तो बाकी काम आसान है। संतों ने 'शिवाय नमः' कहा। एक 'शिव' शब्द काफी हुआ और नीति का अधिष्ठान कायम हुआ। एक भगवन्-नाम से संतों ने अनेक काम कर डाले।

अब काम आपको करना है

बाबा जप करे, तो फिर काम कौन करेगा? काम आप करेंगे, क्योंकि आपका खाना, आपकी नींद क्या बाबा के करने से पूरी होती है? तो, हिंदुस्तान का मसला हिंदुस्तान हल करेगा। हमने अपना मसला हल किया और कोई मालकियत नहीं रखी। जैसे साँप दूसरों के घर में जाकर रहता है, वैसे ही बाबा ने किया। अवधूत मुनि ने कहा, "मैं साँप से बोध लेता हूँ।" उसी तरह हमने साँप से बोध लिया, इस देह की तक मालकियत नहीं मानी। अपने लिए कोई वासना तक नहीं रखी।

लोग बड़े-बड़े बम बना रहे हैं। लेकिन ये जिन हाथों ने बनाये, वे ही हाथ इन्हें तोड़ेंगे। तलवार, बंदूक, तोपें लोहे के कारखानों में वापस जायेंगी, वे पिघलाये जाकर रस बनेगा और खेती के हल, हंसिया, सूत के लिए तकुवा आदि बनेंगे। जिन्होंने बंदूक के कारखाने बनाये, वे ही ये काम करेंगे, लेकिन विचार बदलेगा तब। विचार बदलने पर सृष्टि-संहार होता है और नयी सृष्टि पैदा होती है। सूर्य-किरणें फैलीं कि जिन्होंने बिस्तर खोले थे, उन्होंने ही वे लपेटे। उसी तरह शस्त्रास्त्र बनाने वाले ही उन्हें खतम करेंगे—जब उनके ध्यान में आयेगा कि शस्त्रों से मसला हल नहीं होता। लोग पूछते हैं, क्या इतनी बड़ी योजनाएँ गिर पड़ेंगी? तो भूकम्प में बड़ा मकान ही जल्दी गिरता है, छोटा टिक भी सकता है। इसी तरह हिंसा की बड़ी-बड़ी योजनाएँ गिर पड़ने वाली हैं। उसके लिए विचार फैलाना होगा। वही काम बाबा कर रहा है। बाबा का विचार आप समझ कर अपना लेंगे, उस पर अमल करेंगे और दूसरों को भी वह समझा देंगे, ऐसी हम आशा करते हैं।

(सुलुर, कोइंबतूर, ६-१०-'५६)

संकल्प-मीमांसा

प्रश्न : संकल्प की दृढ़ता के लिए क्या करें?

विनोबा : तीन बातों का विचार करना होगा : (१) संकल्प की क्या जरूरत है? (२) वह किस तरह का करें? और (३) संकल्प का पालन कैसे करें?

संकल्प आत्मा से सहजस्फूर्त होते हैं। आत्मा में वह शक्ति रहती है। चेतन का वह एक लक्षण है। इसलिए यथासंभव संकल्प होने दें, करें नहीं। किये हुए संकल्प मानसिक होते हैं। सहजस्फूर्त संकल्प आत्मिक होते हैं। ऐसे आत्मिक संकल्प कल्याणकारक होते हैं।

ऐसे सहजस्फूर्त संकल्प के स्वरूप स्थूल न हों। संयम का संकल्प करते हुए 'फलाँ वस्तु खायेंगे और फलाँ नहीं' ऐसा स्थूल नियम न करें। कभी वे करने भी होते हैं, लेकिन वह प्रकार गौण ही है। भक्ति का संकल्प उत्तम है, लेकिन "नियमित प्रार्थना करूँगा," इतना ही उसका स्थूल रूप न रहे। दूसरे शब्दों में, सत्य-अहिंसादि मूल धर्मों का जिनमें प्रमुख स्थान है, ऐसे संकल्प हों।

मुख्य संकल्प भावनात्मक हों, तो उसके लिए किये हुए नियम सहज ही अमल में आयेंगे। मूल विचार की दृष्टि से वे नियम छोड़ने की आवश्यकता हो, तो छोड़े भी जा सकते हैं। उसके लिए दुख भी महसूस नहीं होगा।

सारांश : (१) संकल्प करें नहीं, होने दें। (२) संकल्प का स्थूल स्वरूप गौण मान कर भाव-स्वरूप मुख्य समझें। (३) अच्छे नियमों के पालन का आग्रह रहे, लेकिन अत्याग्रह नहीं, सत्याग्रह रहे।

('सेवक' से)

अहंकार-निवृत्ति तीन तरह से होती है: १. जिस समाज ने हमें विविध प्रकार का ज्ञान दिया, उस समाज का उपकार हमारे कर्तव्य के लिए कारणीभूत है, इसका भान होना। २. देह, इंद्रिय, मन और बुद्धि से हम अलग हैं, इसलिए सारा कर्तव्य उनका है, हमारा नहीं, इसका ज्ञान होना। ३. करने वाला और कराने वाला परमेश्वर है, हम काष्ठ-पुतलीवत् हैं, ऐसी श्रद्धा रखना। —विनोबा

www.vinoba.in

साधक के लिए अपरिग्रहवाद

(पं० मुनि फूलचंदजी 'श्रमण')

श्रमण-भगवान् महावीर का अपरिग्रहवाद बहुत उच्च कोटि का है। अनेकान्त-वाद हमें प्रेरणा देता है कि तुम जिस विषय को विचारने बैठो, उस विषय को बहुत गहरी और पैनी दृष्टि से देखते रहो। जब तक उस विषय के आभ्यन्तर और बाह्य, प्रत्येक पहलू के अविभाज्य अंश तक न पहुँच जाओ, जब तक उस अविभाज्य अंश की अनन्त शक्तियों को पार करके उस अविभाज्य अंश रूप शक्ति पर्यन्त न पहुँच जाओ, तब तक तुम अपने प्रयत्न को चालू रखो। किसी कवि ने भी ठीक ही कहा है–

इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रान्ति भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुँचना उस जीवन तक, जिसके आगे राह नहीं॥

जब तुम उस अविभाज्य अंश तक पहुँच जाओगे, तब उसी अवस्था का नाम कैवल्य है, पूर्ण है, अनन्त है।

जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ । जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ॥

इस आगम वाक्य से यही जाना जाता है कि जिसने अविभाज्य अंश को जाना है, वह उस द्रव्य के सब पर्यायों को जानता है और जिसने सब पर्यायों को जान लिया, वह उस अविभाज्य अंश को भी जानता है। धर्म के भी अनन्त भेद हैं, उनमें अपरिग्रहवाद भी एक धर्म है। उस एक धर्म के आश्रित अनन्त उपधर्म विद्यमान हैं। अपरिग्रह को समझने के लिए पहले परिग्रह को समझना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि अमृत को समझने के लिए पहले विष को, प्रकाश को समझने के लिए पहले अन्धकार को, सच्चे जवाहरात को समझने के लिए पहले झूठे जवाहरात को समझना जैसे अनिवार्य हो जाता है, इसी प्रकार अपरिग्रह धर्म को समझने के लिए पहले परिग्रह-पाप को समझना अनिवार्य हो जाता है।

परि-समन्तात् मोहबुद्ध्या गृह्यते यः स परिग्रह।

मोह-बुद्धि के द्वारा जिसे चारों ओर से ग्रहण किया जाता है, वह परिग्रह है। वह परिग्रह तीन प्रकार का होता है—इच्छारूप, संग्रहरूप और मूर्च्छारूप।

इच्छारूप परिग्रह—अनधिकृत सामग्री को पाने की इच्छा करना। संग्रहरूप परिग्रह—वर्तमान काल में मिलती हुई वस्तु को ग्रहण करना। मूर्च्छारूप परिग्रह—संगृहीत सामग्री पर ममत्व भाव और आसक्त होना। ये उपधि-परिग्रह के भेद हुए। जैनागम में कर्म और शरीर को भी परिग्रह माना है, अर्थात् ग्रहण की हुई वस्तु को छोड़ना नहीं और छोड़ने का प्रयत्न भी नहीं करना। कर्म से तात्पर्य है, क्रियमाण और सञ्चित, इन्हें सर्वथा क्षीण करने के लिए प्रयत्नशील नहीं होना। अब आइये मूल विषय पर—न परिग्रहः इत्यपरिग्रहः, यहाँ नञ् समास हो रहा है। नञ् समास दो तरह का होता है—प्रसज्य निषेध और पर्युदास निषेध। एक सर्वरूप से निषेध करता है और दूसरा देशरूप से निषेध करता है।

देशरूप से निषेध का अर्थ है, स्थूल परिग्रह या त्याग और सर्व-निषेध का अर्थ है, अप्रमत्त मुनिधर्म। स्थूल परिग्रह का त्यागी श्रावक होता है। उसका अपरिग्रह धर्म तीन हिस्सों में विभक्त है : १—इच्छा को परिमित करना, यह स्थूल अपरिग्रह है। २—इच्छा परिमित होते हुए भी अन्याय और अनीति से संग्रह न करना, यह भी अपरिग्रह है।

३—न्याय-नीति से उपार्जित सम्पत्ति और अपनी आमदनी का चौथा हिस्सा धर्म तथा समाज के लिए निकालना, यह भी अपरिग्रह-व्रत है, क्योंकि जिसमें ममत्व-बुद्धि अधिक होगी, वह उक्त तीन प्रकार का अपरिग्रह व्रत नहीं धारण कर सकता। यदि लोभ मोहनीय के टेम्प्रेचर की डिग्री प्रत्याख्यानावरणीय तक पहुँचेगी, तब वह जीव उक्त तीन प्रकार के अपरिग्रह को धारण कर सकता है। उसीको धावक कहते हैं। सर्वथा अपरिग्रह ग्रहणमूलक नहीं होता, क्योंकि मोह-बुद्धि से ग्रहण न करना ही अपरिग्रह का वास्तविक अर्थ है।

स्थूल परिग्रह विरमण-व्रत—ग्रहणमूलक और त्यागमूलक, दोनों प्रकार का है।

जहाँ परिग्रह है, वहाँ उत्पीडन, हिंसा, शोषण, झूठ और चोरी है। जहाँ अपरिग्रह है, वहाँ सहानुभूति, अहिंसा, मैत्री, सत्य और ईमानदारी है।

अपरिग्रह—केवल निवृत्त्यात्मक ही नहीं है, प्रत्युत प्रवृत्त्यात्मक ही है। त्याग तथा अग्रहण निवृत्तिप्रधान है और दान प्रवृत्तिप्रधान है।

साधकों को चाहिए कि वे अपना जीवन अपरिग्रहवाद के साँचे में ढालने का निरंतर अभ्यास करें और साथ ही समत्व, परत्व और प्रपंचत्व, इन तीनों को छोड़ कर अनेकान्तवाद का अनुसरण करें और क्षमावीर बन कर मोक्ष-पथ के पथिक बनें।

('श्रमण' से सादर)

माध्यम का प्रश्न और विनोबा

(दामोदरदास मूँदड़ा)

पिछली बार 'कल्की*' के सहसंपादक विनोबा से मिलने के लिए मद्रास से आये थे। १९६५ से हिंदी को अनिवार्य रूप से राष्ट्रभाषा मानने की 'खेर-कमेटी' की राय बताते हुए उसके परिणामस्वरूप प्रगति को धक्का पहुँचने की आशंका उन्होंने प्रकट की और कुछ प्रश्न विनोबा से पूछे :

सम्पादक—वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा हिन्दी माध्यम द्वारा कैसे संभव है ?

विनोबा—रूस, चीन, जापान, जर्मनी में यह कैसे संभव हुआ ?

सम्पादक—वहाँ के जैसे अनुवाद का काम यहाँ कब और कैसे हो पायेगा ?

विनोबा—जब भी करेंगे और जैसा भी करेंगे, होगा ! लेकिन मैं पूछता हूँ कि साइंस का भाषा से क्या संबंध है ? उसमें भावना की अभिव्यक्ति का तो सवाल नहीं है। सिद्धान्त बताने होते हैं। 'ऑक्सिजन' शब्द कायम रख कर भी उसके संबंध की जानकारी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में दी जा सकती है। उतने भर के लिए इस देश पर पचास साल तक अंग्रेजी भाषा नहीं लादी जा सकती !

सम्पादक—राजाजी के विचार तो आपको मालूम ही होंगे !

विनोबा—हाँ, वे कहते हैं कि 'डेढ़ सौ साल से अंग्रेजी की आदत पड़ गयी।' लेकिन उसके कारण ऐसा तो नहीं हुआ कि बच्चा जन्म लेते ही अंग्रेजी बोलने लगा ! माता-पिता को अंग्रेजी सीखने में जितना कष्ट हुआ, उतना ही बच्चों को भी होता ही है। फिर भी बाप कहता है, 'बेटा अंग्रेजी पढ़ !' वह बाप है या राक्षस ? उसको तो बेटे को कहना चाहिए कि 'बेटा, मैं अंग्रेजी पढ़ चुका, अब तुम्हें पढ़ने की जरूरत नहीं। मैं तुम्हें अंग्रेजी पुस्तकों में से जानकारी देता रहूँगा।' हर एक अंग्रेजी जानने वाला अगर जीवन भर एक भी अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद कर डाले, तो कम-से-कम दस हजार उत्तमोत्तम पुस्तकों का अनुवाद हो जायगा। लेकिन ऐसा करने के बजाय अंग्रेजी सीखने पर ही जोर दिया जा रहा है। नौ-नौ, दस-दस साल से ही अंग्रेजी का बोझ बच्चों के मन पर लाद कर उन्हें निर्वीर्य और पुरुषार्थहीन बनाया जा रहा है। सब शक्ति अंग्रेजी के रटने में ही खतम होने से बच्चों की उम्र कम हो रही है। प्रयोग ही करना हो, तो इंगलैण्ड पर करके देखो। वहाँ के सब लड़कों को मराठी या हिन्दी माध्यम द्वारा पढ़ाया जाय, तो पूरा राष्ट्र निर्वीर्य बनेगा। मैं अंग्रेजी पढ़ाई के विरुद्ध नहीं हूँ। कुछ लोग वह सीखें और अच्छी तरह से सीखें। लेकिन सभी को उधर दौड़ने की जरूरत नहीं। अंग्रेजी की सामर्थ्य मराठी या तमिल में नहीं है, यह भ्रम है। 'चॉसर' की पुरानी अंग्रेजी आज लोगों को समझने में कठिनाई हो रही है, लेकिन दो हजार साल पहले का तमिल 'कुरल' आज भी लोग समझते हैं।

संपादक—लेकिन हिंदी दिन-ब-दिन संस्कृतनिष्ठ जो बनती जा रही है ?

विनोबा—वह तो बनेगी ही। सर सप्रू के घर में पहले पर्शियन चलती थी। आज शायद पर्शियन कोई जानते भी नहीं होंगे। जवाहरलालजी कहते हैं कि जब भी मैं इलाहाबाद जाता हूँ, मुझे नयी हिंदी सीखनी पड़ती है।

संपादक—तो फिर संस्कृत ही राष्ट्रभाषा क्यों न की जाय ?

विनोबा—इस प्रक्रिया द्वारा तो वह होने ही वाला है। सभी भाषाओं में धीरे-धीरे संस्कृत अधिक मात्रा में आने वाली है। संस्कृत शब्दों का प्रवेश हुआ कि राष्ट्रभाषा संस्कृत बनने में कोई देर नहीं लगेगी। यह आश्चर्य की बात नहीं है। वह पुराने जमाने में राष्ट्रभाषा थी ही। इसीलिए आचार्यों ने उसका प्रयोग किया और इसीलिए तुलसी व कबीर जैसे अनुयायी रामानुज को तथा ज्ञानदेव व रामकृष्ण, विवेकानंद जैसे अनुयायी शंकराचार्य को प्राप्त हो सके।

फिर विनोबाजी ने उन अनेक तत्सम और तद्भव शब्दों का जिक्र किया, जो खास कर 'कुरल' में भी पाये जाते हैं।

फिर संपादक महोदय से कहा : "अगर आप चाहते हैं कि दक्षिण का गौरव बढ़े, तो दक्षिणवालों को राष्ट्रभाषा सीखनी चाहिए।"

प्राप्त जानकारी से पता चला कि तमिलनाड में हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। गत साल ४० हजार और इस साल ५० हजार छात्रों ने हिंदी की परीक्षाएँ दीं। हिंदी का आज भी वहाँ कोई विरोध नहीं है। जो विरोध दिखायी देता था, वह भी अब नहीं रहेगा, इसलिए कि सरकारी नौकरी के लिए अब हिंदी परीक्षा अनिवार्य नहीं है।

---

* तमिल साप्ताहिक, जिसकी ८० हजार प्रतियाँ छपती हैं। —सं०

www.vinoba.in

कलकत्ता की भूदान-पदयात्रा

(वल्लभस्वामी)

कलकत्ता और पदयात्रा, मानो बिल्कुल परस्पर-विरुद्ध ! लेकिन भूदान के अनेक चमत्कारों में से यह भी एक चमत्कार है। विधायक काम की दृष्टि से शहरों की ओर अब तक कुछ कम ही ध्यान दिया गया है। १९५५ के पुरी-सम्मेलन के आवाहन के अनुसार गुजरात में श्री रविशंकर महाराज ने अपनी अखंड पदयात्रा शुरू कर दी। उस सिलसिले में उन्होंने अहमदाबाद शहर की पदयात्रा दो-ढाई महीनों तक चलायी थी, तो भी शहरों की ओर विशेष ध्यान खिंचा गया विनोबाजी के ३० जनवरी ५६ के पोचमपल्ली के प्रवचन से, जिसमें उन्होंने कहा था कि राज्य-पुनर्रचना के निमित्त जो हिंसा देश में फूट निकली है, उसका एक कारण यह भी है कि हम लोग शहरों की ओर जरूरी ध्यान नहीं दे सके; वह कमी हमको दूर करनी चाहिए।

बंगाल में भी भूदान का काम अभी नजरों में भरने लायक नहीं हुआ है। लेकिन उसमें दोष वहाँ के संयोजक और उनके साथियों का नहीं है। वे तो निष्ठा से अपना कर्तव्य कर रहे हैं। श्री चारु बाबू बंगाल विधान-सभा में विरोधी पार्टी के नेता थे। बाद में भूदान के काम को पूरा समय देने की दृष्टि से और भूदान के काम में सब पक्षों का सहकार लेने की दृष्टि से वे विधान-सभा से मुक्त हुए। उन्हींके अविरत परिश्रम से बंगाल में भूदान-प्राप्ति पाँच आँकड़ों तक पहुँची है। किस तरह बंगाल की भू-प्राप्ति का एक-एक आँकड़ा बढ़ रहा है, यह कई बार विनोबाजी बड़े कौतुक से वर्णन करते हैं। "एकश्चंद्रस्तमो हंति"—एक चन्द्र अंधेरा दूर करता है।

पिछले साल बंगाल के देहातों में श्री चारुबाबू ने और उनके साथियों ने छः हजार मील पदयात्रा की, जिसमें से श्री चारुबाबू की पदयात्रा १८०० मील की है। कलकत्ता, जो कि बंगाल का करीब एक चौथाई हिस्सा है, उसमें भी पदयात्रा करके भूदान का संदेश पहुँचाने के इरादे से २२ जुलाई, सन् १९५६ से ही उन्होंने अपने साथियों के साथ पदयात्रा शुरू की, जो २ अक्टूबर तक चली। इस पदयात्रा से परिचित होने की मेरी इच्छा कई दिनों से थी। आखिर वह मौक़ा १ अक्टूबर को मिला। सुबह साढ़े पाँच बजे के करीब का समय था। प्रार्थना समाप्त हुई थी और पदयात्रा को निकलने की तैयारी हो रही थी। पड़ाव में रहने वाले २०-२५ भाई-बहन और केवल पदयात्रा में शामिल होने वाले अन्य २०-२५ बहन-भाई थे। भूदान का संदेश और घोष-वाक्यों के विज्ञापन-पट कई भाइयों के हाथ में थे। एक भाई के हाथ में गांधीजी का और दूसरे के हाथ में विनोबाजी का फोटो था। एक भाई भूदान के घोष-वाक्य और बोधवाक्य वाले हस्तपत्रक लिये हुए थे, जो रास्ते में बाँटते जाते थे। एक भाई भूदान-साहित्य लिये हुए थे। रास्ते तथा पास के घरों के भाई-बहनों को वह साहित्य वे दिखलाते और बेचते थे। सारी टोली के आगे कपड़े का एक तोरण लिये हुए दो भाई चल रहे थे, जिस पर भूदान-पदयात्रा का मुद्रालेख था। तोरण के आगे श्री चारुबाबू कभी विचारमग्न, तो कभी साथियों के साथ कार्य-योजना की बातें करते हुए चल रहे थे। तोरण के पीछे श्री सौरेन्द्र वसु गले में हारमोनियम लटकाये हुए और अपने मधुर पहाड़ी स्वर से भूदान के गाने और नामधुन से सारा वातावरण गुंजाते हुए चल रहे थे। भूदान के उद्घोष योजनापूर्वक किये जाते थे। कुछ भाई-बहन ताल बजाते हुए साथ दे रहे थे। सौरेन्द्र वसु गाते हैं, तब मानों उसमें वे मस्त हो जाते हैं और उस मस्ती का स्पर्श औरों को भी कराते हैं। टोली में जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले भाई-बहन थे। कोई पी. एस. पी. वाला, तो कोई काँग्रेस वाला, कोई अनाज का व्यापारी, तो कोई बैंक में काम करने वाला, कोई साहित्यिक, तो कोई शिक्षक, कोई बिल्कुल जवान, तो कोई श्री सुधीर लाल सरीखे वयोवृद्ध। शांत, गंभीर, मधुर स्वर के साथ की यह पदयात्रा, चैतन्य प्रभु और उसके साथियों की नाम-संकीर्तन यात्रा का स्मरण कराती थी। मोहल्ले के बीच-बीच में इकट्ठे हुए लोग तथा घरों के ऊपर के मंजिलों से ताकते हुए स्त्री-पुरुष आश्चर्य और आनंद के साथ टोली की ओर देखते थे। रास्ते में कई जगह पदयात्रा के पड़ाव के स्थान की तथा शाम की सभा के स्थान की जानकारी देने वाले पत्रक चिपकाये हुए थे।

इस तरह करीब दो घंटे पदयात्रा चलती थी। पड़ाव पर पहुँचने के बाद के आजूबाजू के लोगों में साहित्यप्रचार आदि काम किया जाता था। शाम को नियत स्थान पर सभा होती थी, जिसमें पचास से लेकर पाँच सौ या हजार-दो हजार तक भी लोग रहते थे। लोग कितने ही हों, चारुबाबू की वाक्धारा दो-ढाई घंटे चलती है। शांत, परन्तु भावनामय भाषा में भूदान और सर्वोदय का विचार सारी पृष्ठ-भूमिका के साथ वे समझाते हैं।

गणसेवकत्व की स्थापना

२२ जुलाई से २ अक्टूबर तक की इस पदयात्रा में कई जगह टोली का स्वागत पुष्पवृष्टि से किया गया। सभी जगह निवास और भोजन की उचित व्यवस्था हुई। कुल मिला कर करीब ३५० मील की पदयात्रा हुई, जिसमें १७५ दानपत्रों द्वारा वार्षिक १३,६७६) रुपयों का सम्पत्ति-दान, ४३ दाताओं द्वारा ३६२६) रुपये का साधन-दान, ७ दाताओं द्वारा १३ एकड़ ६३ सेंट भूदान मिला। १६५६) रुपयों की साहित्य-बिक्री तथा भूदान-पत्रिका के ५९ ग्राहक हुए, संपत्तिदान की रकम में से पहली किस्त के तौर पर ८० दाताओं से २५८५) रुपये नकद मिले। ऊपर-ऊपर से देखने वाले को शायद ये आँकड़े असरकारक न लगें, लेकिन कलकत्ता जैसे शहर में, जब कि इने-गिने लोगों के अलावा शायद ही किसी राजनीतिक पार्टी ने खास मदद की हो, यह परिणाम अत्यन्त आशादायी है। पदयात्रा के द्वारा शहर के कोने-कोने में भूदान की आवाज गूँज उठी। चारुबाबू के भाषणों ने तथाकथित बुद्धिवादी, किन्तु असल में मंदबुद्धि, जो कि खुद होकर किसी वस्तु का अध्ययन नहीं करेंगे, ऐसे लोगों में भूदान के बारे में जो भ्रम थे, उनको काफी हद तक दूर किया है और सबसे महत्त्व की बात यह है कि कार्यकर्ता और सर्वोदय-प्रेमियों को अपनी शक्ति का भान हुआ है, गणसेवकत्व निर्माण हुआ है। अपनी आजीविका का काम संभालते हुए प्रति सप्ताह भिन्न-भिन्न मुहल्लों में पदयात्रा निकालने का सिलसिला जारी रखने का उन्होंने सोचा है। उसके अलावा साहित्य-प्रचार आदि की योजना भी बन रही है। विनोबाजी हमेशा कहा करते हैं कि पचासवीं चोट से पत्थर फूटा। उसके माने पहले की चोटें बेकार गयीं, ऐसा नहीं है। पहले की चोटों के कारण ही पचासवीं चोट से पत्थर फूटा। यह पदयात्रा कलकत्ते पर ऐसा ही पहला जोरदार आघात था, स्वामित्व-विसर्जन के लिए।

'सप्तपदी' द्वारा जीवन-दीक्षा का संकेत

श्रमभारती-खादीग्राम अहिंसक समाज-रचना के लिए एक प्रयोगशाला है। सर्व-सेवा-संघ के मौजूदा अध्यक्ष श्री धीरेन्द्रभाई के मार्ग-दर्शन और संचालन में अनेकों भाई-बहन अहिंसा की इस प्रयोगशाला में पूरे उत्साह, दृढ़ता और सातत्य के साथ साधना कर रहे हैं। अहिंसक समाज-रचना की इस प्रयोग-यात्रा के बीच न जाने कितने प्रकार के नये अनुभव, नये विचार, नये कार्य एवं नये ढंग सामने आते हैं और प्रत्येक प्रसंग एवं अवसर का लाभ अहिंसा की साधना की दृष्टि से लिया जाता है।

अभी की बात है। ता० २० सितंबर को वहाँ हुए एक विवाह-समारंभ के समय श्री धीरेन्द्रभाई ने सप्त-पदी के मंत्रों का नया अर्थ किया। खादीग्राम की शादियों में सर्वोदय के आदर्श को निबाहने का प्रयत्न बराबर होता रहा है, जैसे कि अन्यत्र भी होता आया है।

भारतीय परम्परा से होने वाली शादियों में पति-पत्नी सप्त-पदी के मंत्रों द्वारा जीवन भर सारे धार्मिक और सामाजिक कृत्यों में पारस्परिक रूप से सहयोग करते रहने का संकल्प करते हैं। धीरेन्द्रभाई ने इस सप्त-पदी को **स्वावलम्बी स्वाधीन ग्राम-रचना** के सात प्रमुख एवं अनिवार्य अंगों से जोड़ दिया। उन्होंने बताया कि इन सप्त कर्मों को प्रेम और निष्ठा के साथ पति-पत्नी मिल कर जीवन भर करें और इन्हें अपने जीवन का लक्ष्य बनायें। सप्त-पदी के मंत्र की मंशा यही है। नवसंस्कारित सप्त-पदी इस प्रकार है: —(१) **भूमि-सेवा**: इसमें खेती, सिंचाई के साधन बनाना, जमीन तोड़ना आदि सब आते हैं। (२) **गृह-कर्म**: इसके अन्दर गृह बनाने की कला तथा उसे सुव्यवस्थित रखने का कार्य आता है। (३) **गो-सेवा**, (४) **ग्रामोद्योग**—इसमें ग्राम की रचना का कार्य भी समाविष्ट है। (५) **रसोई**, (६) **सफाई**; इसमें टट्टी-पेशाब की सफाई, स्वास्थ्य-रक्षा, खाद बनाना आदि आता है। (७) **कताई**। इस प्रकार खेती और कताई द्वारा अन्न-वस्त्र में स्वावलम्बी होकर, गाँव और समूचे समाज की मिल कर सेवा और भलाई करना गार्हस्थ्य जीवन का उद्देश्य है।

वर-वधू ने दिन भर अपने साथियों के साथ इन सप्तकर्मों को सप्त-पदी के रूप में किया और सायंकाल में सबकी उपस्थिति में विवाह का शुभ कर्म सम्पन्न हुआ।*

—रामकृष्ण शास्त्री

---

* आचार्य काकासाहब कालेलकर ने भी इसी प्रकार की दीक्षाओं से संपन्न विवाह-विधि वर्धा में पहले शुरू की, जो देश में फिर कई जगह प्रचलित हुई। —सं०

www.vinoba.in

तमिलनाड की पदयात्रा से—

(निर्मला देशपांडे)

कोइंबतूर नगर दक्षिण का 'अहमदाबाद' ही है, जहाँ कपड़े की चालीस मिलें हैं। विनोबाजी ने ता० १ अक्टूबर को कोइंबतूर में प्रवेश किया, तो सैकड़ों नागरिकों ने उत्साह से उनका स्वागत किया। दक्षिण का रिवाज है कि खाली हाथ मिलने नहीं जाना चाहिये, इसलिये जगह-जगह भाई, बहनें, बच्चे आदि फलों से भरी हुई थालियाँ ले-लेकर सामने आते थे। विनोबाजी थाली में से एक-एक फल उठाते और चारों दिशाओं में उछालते। कहीं भीड़ में पिता के कंधे पर खड़ा कोई बच्चा उस फल को झेलता, तो कहीं किसी छत पर खड़ी बहन उसे पाती या कहीं किसी गली के किनारे खड़ा मजदूर। जिसे फल मिलता, वह खुशी से फूला न समाता।

कोइंबतूर की प्रथम दिन की सभा भी नगरवासियों के लिए चिरस्मरणीय रही होगी। ऊपर से बारिश, नीचे कीचड़-कादो और सूरज डूबते ही चारों ओर फैला हुआ अंधकार। आरम्भ में कुछ लोग छाते लेकर खड़े थे। लेकिन विनोबाजी ने जब उनसे कहा कि 'बारिश से डरोगे, तो खेती कैसे करोगे? बारिश तो परमेश्वर का प्रसाद है, परमेश्वर हजार हाथों से हमें आलिंगन दे रहा है', तब सब लोग शांति से बैठ गये। उस दिन के भाषण में वे तमिल साहित्य के वर्षा के गीतों-वचनों की ही सतत वर्षा करते रहे। एक पत्रकार ने कहा कि 'जब विनोबाजी ने कवि 'तिरुप्पावै' के ही एक वचन का जिक्र किया, जो यहाँ के तमिल के बड़े-बड़े विद्वान भी नहीं जानते हैं, तो मुझे आनंद की जो अपूर्व अनुभूति हुई, वह अकल्पनीय है!' इस दिन की सभा का लोगों के मन पर इतना गहरा असर हुआ कि कोइंबतूर शहर में सर्वत्र संपत्तिदान की ही चर्चा सुनाई देने लगी।

२ अक्तूबर को विद्यार्थियों की सभा हुई, जिसमें विनोबाजी ने ज्ञान और कर्म का समन्वय करने वाली नयी तालीम की महत्ता बतायी। फिर बुनकर-संघ की सभा हुई, जिसमें उन्होंने बुनकर-संघ बना कर बिजली-करघों के खिलाफ आवाज़ उठाने को कहा। नगरपालिका के भवन में गांधीजी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए विनोबाजी ने कहा—"विज्ञान के जमाने में आज ऐसी शक्ति हमारे हाथ में है कि कोई मनुष्य देह छोड़ कर चला गया, तो भी उसका शब्द और रूप भी पकड़ कर रख सकते हैं। परंतु महापुरुषों में जो अंतर्ज्ञान था, वह किसी फिल्म या पुतले में नहीं आ सकता, क्योंकि विज्ञान में वह ताकत नहीं है। परंतु हम उसे अपने हृदय में पकड़ सकते हैं। इसलिए मुझे ऐसी प्रतिमाओं के अनावरण के कार्यों में दिलचस्पी नहीं है। हम आशा करते हैं कि कम-से-कम जिन्होंने यह योजना बनायी, उन लोगों के जीवन में यह चीज आयेगी।"

'पिलमेडु' ग्राम में एक बड़े जमींदार तथा मिल-मालिक इन दिनों भूदान के काम में लगे हैं। उन्होंने विनोबाजी से 'हनुमान' की। उपाधि प्राप्त की है। करीब दो हजार एकड़ भूदान उन्होंने दिया है। उनके वृद्ध पिता विनोबाजी से मिलने आये। वे बीस-पचीस साल तक रूई के गट्ठे लेकर साइकिल पर घूमे हैं। कई सालों के बाद सतत परिश्रम से आज वे छह मिलों के मालिक बने हैं। विनोबाजी ने कहा, "रूई के गट्ठे बेचने के लिए आपने इतनी मेहनत की। उतनी ही अगर भगवान् के लिए करते, तो कितना अच्छा होता!"

'सिंगनल्लुर' गाँव कोइंबतूर का ही हिस्सा है, जहाँ पर मिलें होने के कारण मजदूर ही अधिक तादाद में हैं। उनमें बहुत उत्साह तथा संगठन दिखाई दिया। प्रार्थना-सभा में हजारों मजदूर अत्यंत शांति से क्रांति का विचार सुन रहे थे। पाँच हजार मजदूरों ने वहाँ संपत्ति-दान-पत्र अर्पण किये।

मजदूरों के लोकप्रिय नेता स्वर्गीय श्री रामस्वामीजी के स्मारक में एक हाईस्कूल वहाँ बनाया जा रहा है, जिसका शिलान्यास विनोबाजी ने किया। श्री रामस्वामी उनके साथ वेलूर जेल में थे। उन्होंने कहा, "उस समय जेलवालों ने हमें अलग रखा था। वह अंतर आज टूट गया और शिलान्यास का भाग्य हमें हासिल हुआ। लेकिन स्मारक से ही आपका कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता है। वे परोपकार और प्रेम की जिस राह पर चले, उसी पर हम सबको चलना है। उन्होंने सबकी सेवा की, इसलिए उनको आप सबका प्रेम हासिल हुआ। यह मत समझिये कि गरीब उपकार क्या कर सकते हैं। जो प्रेम भगवान् ने गरीबों को दिया है, श्रीमानों को भी वह हासिल नहीं है। हमें दूसरों से अलग नहीं पड़ना है, सब मानवों पर प्रेम करना है, परंतु मदद गरीबों की करनी है। गरीब ही गरीबों को ज्यादा मदद कर सकते हैं; क्योंकि वे एक-दूसरे का हृदय जानते हैं!"

इरुगुर में अंबर चरखे का केन्द्र है। केन्द्र का निरीक्षण करके विनोबाजी ने संदेश दिया: "अब गाँव में खद्दर के सिवा दूसरे कपड़ों का बहिष्कार होना चाहिए।" पल्लडम् तालुके में कम्युनिटी प्रोजेक्ट में काम करने वाले कार्यकर्ताओं से कहा: "कम्युनिटी प्रोजेक्ट के क्षेत्र में जो काम चला है, उसकी बुनियाद भूमि के बँटवारे पर ही होनी चाहिए, तब वह काम बढ़ेगा। कम-से-कम छठा हिस्सा और छोटे गाँवों का ग्रामदान हासिल करने का काम हर गाँव में करना चाहिए। तब भूदान के आधार पर गाँव में दाताओं की एक अच्छी समिति बन सकेगी, जिसके जरिये गाँव के विकास के दूसरे काम किये जा सकेंगे।"

कार्यकर्ताओं की सभा में एक भाई ने पूछा कि 'यहाँ जमीन का बँटवारा क्यों नहीं करते?' विनोबाजी ने कहा: "यहाँ पर सेंट, पाव एकड़, ऐसी जमीन मिलती है। तो बाँटने में उत्साह कैसे आवेगा? मध्यप्रदेश में बारह सौ लोगों ने पंद्रह हजार एकड़ जमीन एक दिन में—गांधी-जयंती के दिन बाँटी। उसके पहले उन्होंने शिविरों में बँटवारे का तरीका समझाया। इसीको जन-आंदोलन कहते हैं। तमिलनाड में यह जो चल रहा है, वह आरंभमात्र है, क्रांति नहीं है। अभी दरवाजा खुला नहीं है।" एक भाई ने कहा: 'दूसरे छोटे-मोटे काम हैं, इसलिए भूदान में पूरा समय नहीं दे सकते हैं।' विनोबाजी ने कहा, "गाँव को आग लगी हो और ब्राह्मण संध्या कर रहा हो, तो क्या उसे संध्या छोड़ कर आग बुझाने नहीं जाना चाहिए? संध्या उसका स्वधर्म है, परंतु जब आग बुझाना का परम धर्म सामने खड़ा होता है, तब स्वधर्म को छोड़ना पड़ता है। भगवान् ने गीता में कहा है, 'सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'—भगवान् ने सब धर्मों को छोड़ने के लिए कहा है, 'अधर्मों' को नहीं। इसलिए आपको दूसरे सारे अच्छे काम छोड़ कर इसमें लगना चाहिए।" एक भाई ने पूछा: "Does the Govt. recognize your movement?" [क्या सरकार आपके आंदोलन को मान्यता देती है?] विनोबाजी ने दो क्षण रुक कर हँसते हुए कहा: "I don't recognize the Govt. at all." [मैं इस सरकार को मानता ही नहीं!]

"१९३७ में एक प्रमुख समाजवादी नेता मुझसे मिले थे। वे कहते थे कि गांधीजी की अहिंसा हमें मंजूर नहीं है। मैंने उनसे कहा कि हिंसा-अहिंसा का सवाल गौण है। परन्तु मुझे यह बताइये कि क्या हिंसा कभी जनता की शक्ति हो सकती है? हिंसा के कार्यक्रम में स्त्रियाँ, बच्चे या कमजोर क्या हिस्सा ले सकते हैं? याने जो ताकतवर हैं, जिनके हाथ में शस्त्र है, उन्हींकी वह शक्ति है। अर्थात् हिंसा 'मासेस्' [जनता] की शक्ति नहीं, क्लासेस् (ऊँचे वर्गों) की ही शक्ति हो सकती है, फिर भले ही आप 'for the masses' [जनता के लिए] कह कर उस शक्ति को इस्तेमाल करने का दावा करें। परंतु वह कभी 'जन-शक्ति' नहीं हो सकती। अहिंसा ही 'जनशक्ति' हो सकती है।' उस नेता ने इस विचारधारा को कबूल किया।"

इसका नाम है क्रांति!

(विनोबा)

चीन में सब लोगों ने ज़मीन बाँट ली है, पर कत्ल से क्रान्ति की है। हिन्दुस्तान में भी ज़मीन बँट जाय, तो लोगों में उत्साह आयेगा। लेकिन यहाँ कत्ल का रास्ता नहीं लिया जायगा। दूसरे किसी ढंग से ज़मीन बाँटनी होगी। नहीं तो लोगों में उत्साह कैसे आयेगा? बाबा की मीटिंग में हज़ारों लोग शांति और एकाग्रता से सुनते हैं और उनके हृदय में उत्साह आता है, क्योंकि बाबा ज़मीन बाँटने की और गरीबों के उत्थान की बात कर रहा है। बाबा ऐसी चीज़ लोगों के सामने रख रहा है कि उससे देश में चैतन्य की स्फूर्ति आयेगी। बाबा को ५ साल में लाखों श्रोताजनों ने सुना है। यहाँ भी हजारों लोग सुनने को आते हैं। भाषा भी नहीं आती। मगर सीख रहा है। किन्तु बोल नहीं सकता, तो तर्जुमा करने वाला रखना पड़ता है। सो 'गणपति' का 'वानर' करता है। फिर भी लोग सुनने को आते हैं, क्योंकि यह जनता की सेवा का काम है। इससे क्रांति होती है। आज लोग क्रांति यानी खूनी क्रांति समझते हैं। परन्तु यह क्रांति का अर्थ नहीं है। क्रांति का अर्थ है, जीवन में बदल। पुराना जीवन खतम और नये जीवन का आरम्भ।

उस नवजीवन का आरम्भ खूनी क्रांति से भी हो सकता है और शांति से भी हो सकता है। भूदान का काम शांतिमय क्रांति का काम है। हम ज़मीन की मालकियत मिटाना चाहते हैं। बिहार में लाखों लोगों ने करीब इक्कीस लाख एकड़ ज़मीन दी है। फिर भी अब तक आधे गाँवों में ही पहुँच पाये हैं। बड़े

www.vinoba.in

जमींदार भी अपनी ज़मीन का हिस्सा देकर सेवक बने हैं, भूदान-समिति में दाखिल होकर भूदान का काम करते हैं। कुछ लोग वानप्रस्थाश्रम लेकर भूदान के काम में लग गये हैं। कल ही हमसे मिलने के लिए बिहार से पलामू जिले के श्री बच्चू बाबू आये हैं। वे बड़े जमींदार थे। लेकिन उन्होंने अपनी जमीन भूदान में दे डाली और अब खुद भूदान के काम में लगे हैं। उन्होंने एक जिले की जिम्मेवारी का काम उठा लिया है। अब बच्चू बाबू को कतल करते, तो उनकी ज़मीन तो हमें मिल जाती, लेकिन जो उनकी सेवा मिल रही है, क्या वह मिलती? आज तो जमीन और सेवा, दोनों मिल रही है। कल वे हमसे भूदान के सिलसिले में मिलने आये हैं। २-४ दिन रह कर जायेंगे। लेकिन बाबा से मिलने आये, तो रिक्तहस्तेन कैसे आ सकते हैं? इसलिए ५० एकड़ जमीन का दानपत्र भी साथ में लेकर आये हैं। इसका नाम है क्रांति। क्रांति का काम भूदान के जरिये होता है। पुराना जीवन खतम हुआ, नया जीवन शुरू हुआ।

अब समाज में हमें नये मूल्य स्थापित करने होंगे। अब 'मेरा बेटा,' 'मेरा घर,' ऐसे नहीं चलेगा। जमीन हम सबकी है, मिलजुल कर काम करेंगे और दुःख-सुख बाँट लेंगे। इस तरह नया जीवन शुरू हो जायगा। इस तरह का यह आंदोलन है। इसे ठीक ढंग से चलाया जाय, तो यह यहाँ भी चल सकता है। यहाँ भी कार्यकर्ता मिल सकते हैं। कांजीवरम् में श्री राजाजी को मैंने इसके विषय में कहा था। उन्होंने पूछा था कि आपके भूदान में भूमिवान् कितने हैं? बच्चू बाबू वहाँ खड़े थे—मैंने उन्हींकी मिसाल उन्हें दी थी।

कारमंडे, कोइंबतूर, २०-९-५६

गांधी-जयंती के अवसर पर

देश भर में स्थान-स्थान पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के पुण्यस्मरण के रूप में गांधी-जयंती समारोहपूर्वक मनायी गयी। निम्न स्थानों के समाचार प्राप्त हुए हैं:

पंजाब से पानीपत, करनाल, शाहबाद, कैथल; बिहार से बि० खादी-समिति, संग्रामपुर; रामूडीह, (देवघर); मिडिल स्कूल, बिहारीगंज; सर्वोदय ग्राम, मुजफ्फरपुर; सर्वोदय आश्रम, हरपुर रेवाडी (दरभंगा); बिनोबा ग्राम-सेवा केंद्र, भंडारकोला (भागलपुर); नवगछिया, गोपालपुर (भागलपुर); सहरसा; उत्तर प्रदेश से बाराबंकी, गांधी अध्ययन केंद्र, फर्रुखाबाद आदि। जगह-जगह प्रभात-फेरियाँ, सामूहिक प्रार्थनाएँ, सामुदायिक ग्राम-सफाई, अखंड सूत्रयज्ञ, सूतांजलि-समर्पण, भूदान-साहित्य-प्रचार, नाटक, अभिनय द्वारा सर्वोदय-प्रचार, श्रमदान, कताई-प्रतियोगिता, सांस्कृतिक समारोह, आम सभाएँ, भूवितरण आदि कार्यक्रम जयंती के उपलक्ष्य में विशेष रूप से हुए।

मुजफ्फरपुर जिले के महुआ थाने में गांधी-जयती के अवसर पर एक महीने के लिए सघन पदयात्रा का प्रारंभ हुआ। पदयात्रा में भूदान-प्राप्ति, भूवितरण, साहित्य-प्रचार आदि कार्यक्रम जारी है। १२५ गुंडियाँ सूतांजलि भेंट हुई। खादी-ग्रामोद्योग-संघ के कार्यकर्ताओं ने भूदान-नाटक का प्रदर्शन किया।

अहमदनगर (महाराष्ट्र) में समयदान मिला, साहित्य-बिक्री हुई। उस क्षेत्र में वितरित भूमि के साथ हर २० एकड के पीछे श्री मोतीलालजी फिरोदिया ने मॉडर्न फाउंडरी की तरफ से एक लोहे का हल देने का संकल्प प्रकट किया।

खंडवा व हरसूद तहसील (म.प्र.) में ७०० एकड भूमि का १२४ भूमिहीनों में गांधी-जयंती के अवसरपर वितरण किया गया। यह वितरण-समारोह सब गाँवों में एक ही दिन मनाया गया। आदाता भूमिहीनों में ४६ हरिजन और ४४ आदिवासी हैं। ६५) रु० की साहित्य-बिक्री भी हुई।

रेल्वे मेन्स काँग्रेस और भूदान-समिति की ओर से रायगढा (कोरापुट) में ११ सितंबर से २ अक्टूबर तक रोज प्रभात फेरी, सफाई, सभा आदि का आयोजन किया गया। ग्राहक बनाये, भूदान-साहित्य बेचा। ९०० फूट लंबा विनोबा-मार्ग श्रमदान से बनाया गया। काफी भाई-बहनों ने उत्साह से सहयोग दिया।

सघन तिरील क्षेत्र, राँची की ओर से क्षेत्र के अंतर्गत तीन ग्रामों में २४ घंटे का अखंड सूत्रयज्ञ किया गया। १२३ व्यक्तियों ने भाग लिया। हटिया गाँव के ८ वर्ष के बालक गोविंद साहू ने लगातार १८ घंटों तक यरवदा चक्र से कताई कर स्थानीय कत्तिनों के बीच नया रिकार्ड कायम किया।

सारण जिला भूदान-समिति की ओर से गोपालगंज थाने में ३९ बीघा जमीन ४७ अदाताओं में वितरित हुई। १००) रु० की साहित्य-बिक्री हुई। २ जीवनदानी कार्यकर्ता मिले।

भूदान-आंदोलन के बढते चरण

पलामू में भूमि-वितरण तथा भूमि-प्राप्ति

विजयादशमी के उत्सव पर पलामू जिले के करार गाँव में भूदानयज्ञ-संमेलन मनाया गया। देहात की जनता सैकड़ों की तादाद में उपस्थित थी। वर्षा के बावजूद दो रोज तक संमेलन जारी रहा।

ता० १३ को डालटनगंज के सुप्रसिद्ध वकील श्री त्रिपाठीजी की अध्यक्षता में भूदान-प्राप्ति-समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें पदयात्राओं में प्राप्त पाँच सौ एकड़ भूमि आचार्य विनोबाजी के मंत्री श्री दामोदरदासजी मूँदड़ा को भेंट की गयी। इस अवसर पर श्री चन्द्रदीपसिंह वकील भी उपस्थित थे। ता० १४ को भूमिवितरण-समारोह हुआ, जिसमें श्री कमलेश्वर प्रसाद सिंह द्वारा विनोबाजी को दक्षिण-पथ में जाकर भेंट की गयी पचास एकड़ भूमि का बँटवारा श्री कमला बाबू की अध्यक्षता में हुआ! श्री बच्चू बाबू ने भूमिपुत्रों को तिलक कर के प्रसाद भेंट किया। श्री मूँदड़ाजी ने प्रमाण-पत्र वितरित किये।

श्री चन्द्रदीप सिंहजी ने आज़ादी के बाद के इतिहास का सिंहावलोकन करते हुए समझाया कि भूदान-आंदोलन के कारण देश में एक नयी चेतना निर्माण हुई है। भूमिवानों को चाहिए कि वे इसका सही स्वरूप समझ कर इसमें अविलंब और पूरा सहयोग दें। वही उनके हक में है।

श्री मूँदड़ाजी ने प्रस्तुत अहिंसक क्रांति की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करते हुए पूछा कि क्या कानून से यह सब सम्भव होता? श्री बच्चू बाबू जैसे ज़मींदार, जो पहिले त्रिपाठी जैसे सुयोग्य वकीलों से बात करना भी शान के खिलाफ समझते थे, आज गाँव-गाँव जाकर गरीब भूमिहीन भाइयों के लिए जमीन माँगते हैं, अपनी जमीन देकर जीवन-दान कर दिया। ऐसी अनेक मिसालें इस देश में बतायी जा सकती हैं। यह परिवर्तन क्या कानून के बल पर कोई कर सकता था?

ग्रामवासी जनता से श्री मूँदड़ाजी ने गाँवों में ग्रामराज्य और रामराज्य की स्थापना करने की अपील करते हुए कहा: "आप लोग आज विजयादशमी का उत्सव मनाते हैं। मान्यता यह है कि राम ने रावण पर विजय पायी। लेकिन स्वामित्व रूपी रावण तो सबके दिलों में आज भी आसन जमाये बैठा है। सम्पत्ति के मोह-रूपी राक्षस पर विजय पाये बिना हम सच्ची विजयादशमी कैसे मना सकते हैं? और उसके बिना गाँवों में रामराज्य कैसे कायम हो सकता है? इसके लिए हमारे पास देने योग्य जो कुछ भी है, उसका उचित अंश हमारे पडोसी को देने की प्रेरणा विनोबाजी सतत देते आ रहे हैं। इसी प्रेरणा के बल एक रोज ऐसा आवेगा कि सारे देशवासी भूमिवान अपने भूमिहीन भाइयों को बुला कर खुद स्वेच्छा से भूमि-वितरण कर देंगे।"

संमेलन में हरिकीर्तन, भजन तथा नाट्य-सम्वाद आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी मनाया गया।

पंजाब-अखंड-पदयात्रा की प्रगति

	सितंबर की प्राप्ति	कुल प्राप्ति
भूमि-प्राप्ति	९०० बीघा	२१३१ बीघा
भूमि-वितरण	६१७ ,,	९६४ ,,
संपत्तिदान	११४५) रु.	९७५२) रु.
हल	७	२८
बैल	१	५
बीज	५० मन, ३० सेर	१९५ मन, ३३ सेर
अन्न-साधनदान	१७७) रु.	८७३
साहित्य-बिक्री	१२१) रु.	५३०) रु.
ग्राहक बनाये	२८	१४०
श्रमदान	७५२ दिन	११४० दिन
बुद्धिदान	३	६
जीवनदान	१	३
गोचर भूमि	—	७९ बीघा
पदयात्रा	१७१ मील	४२३ मील

अखंड पदयात्रा टोली का पडाव १९ सितम्बर को ढाबा कुकरिया में था। ३८ बीघा भूमि सर्वसम्मति से ५ बेजमीन परिवारों में वितरित की गयी। एक परिवार छह बीघा भूमि की बँटाई मालिक को देता था, वह जमीन मालिक ने उसे दान दे दी। २० सितंबर को राजावाली ग्राम में एक हरिजन भाई ने अपनी नयी खरीदी हुई १५

www.vinoba.in

बीघा भूमि में से ढाई बीघे का दानपत्र भर दिया। एक दूसरे भाई ने भी छठवाँ हिस्सा दिया। और भी साधन-दान, संपत्तिदान तथा भूदान-पत्र मिले। २१ ता० को रामसरा में दो भाइयों ने १८ बीघों में से १६ बीघा देकर पूर्णाहुति अर्पण की। ता० २२ को ७२ बीघा भूमि ९ परिवारों में वितरित की गयी। २३ ता० को ढाई बीघा भूमि मिली, जो उसी वक्त सभा में एक भूमिहीन भाई को दी गयी। 'दूतांरावाली' ग्राम में दो बेवा बहनों ने अपनी कुल ५ बीघा जमीन भूदान में दे दी। दो हरिजन भाइयों ने छठा हिस्सा जमीन दी। यहाँ पहले भी बहुत प्रचार हुआ था। कार्यकर्ताओं ने कहा कि जागीरदारों के किले में अब गरीबों ने त्याग करके सेंध लगा दी है। २५ सितंबर को अखंड पदयात्रा टोली अबोहर पहुँची। खूब स्वागत हुआ। कार्यकर्ताओं की सभा में श्री परमानंद डोडा और मित्तलजी ने आंदोलन को सफल बनाने के लिए कार्यक्रम बनाया। मित्तलजी ने कार्यकर्ताओं को बताया कि "वे स्वावलंबन की वृत्ति बना ले और गाँव-गाँव में काम की जिम्मेवारी खुद उठा लें। कम-से-कम हफ्ते में एक हल्के में भूदान-विचार-प्रचार के लिए जायँ एवं पार्टीबाजी से दूर रहें।" २६ ता० को जम्मूबस्ती अबोहर की सार्वजनिक सभा में १३ बेजमीन भाइयों को ८६ बीघा भूमि वितरित की गयी। जिला-काँग्रेस के प्रधान चौ० राधाकिशनजी ने जमीन-मालिकों और धनवानों से अपनी संपत्ति को समाज की तरक्की में लगाने की अपील की। पदयात्रा के दौरान में आठ ग्रामों में भूदान-समितियाँ स्थापित की हैं।

जिला भूदान-समिति, फीरोजपुर —**बनारसीदास गोयल**, संयोजक

बंबई की चिट्ठी

बंबई में सितंबर माह में २१७१) रु. की पाँच भाषाओं की ४६८३ भूदान-पुस्तिकाएँ बेची गयीं। ४८०) रु. के साधनदान और २००) रु. का अंकित दान मिला। दो सौ से ज्यादा ग्राहक बने। २९ सितंबर को श्री दादा धर्माधिकारीजी का भूदान-कार्यकर्ताओं के लिए भाषण हुआ।

श्री नारायण देसाई ने १५ अगस्त से १५ सितंबर तक बंबई में पदयात्रा की। दो नये कार्यकर्ताओं ने सन् '५७ तक पूरा समय भूदान में देने का संकल्प किया। एक माह में १०६ सभाएँ हुईं। करीब ५० हजार लोगों से संपर्क हुआ। ७ हजार से ज्यादा संपत्तिदान-पत्र डेढ लाख रुपये के मिले। विविध पत्रिकाओं के ५५० ग्राहक हुए। करीब १५१ मील की पदयात्रा हुई। पदयात्रा में २४ पाठशालाओं में और कॉलेजों में श्री नारायणभाई के भाषण हुए। तेरह कक्षाओं के प्रौढ़ विद्यार्थियों ने अपने जेबखर्च से संपत्तिदान दिया। घाटकोपर में तो राष्ट्रीय कन्याशाला और गुरुकुल विद्यालय के सभी प्रौढ विद्यार्थियों ने दानपत्र भर दिये। मालाड की वीणा बहन धारिया ने अपनी आय से आधा हिस्सा और श्री बालासाहब खेर ने छठवाँ हिस्सा संपत्तिदान जाहिर किया। ११ सितंबर को १२० बीघा भूदान जाहिर किया गया। —**गणपति शंकर देसाई**, संयोजक

मध्यभारत

भोपाल राज्य के सीहोर तहसील में २० सितंबर से ३० सितंबर तक पूर्वतैयारी के लिए ५१ ग्रामों में कार्यकर्ताओं की १२ टोलियों ने पदयात्रा की। सात शिक्षकों ने संपत्ति-दान और दो ने समयदान दिया। १०५ वर्ष की उम्र के किसान श्री गोरधन सिंह ने पदयात्रा में भाग लेकर भूमिदान-यज्ञ सफल बनाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

मध्यभारत का भूदान-आन्दोलन : सितंबर अंत तक

कुल प्राप्त भूमि ६१९४६·३८ एकड़, कुल दाता-संख्या ९०९०; कुल वितरित भूमि ३०९४·४९ एकड़, आदाता-परिवार, जिन्हें वितरण में भूमि काश्त के लिए मिली है : ९१७; कुल गाँव, जहाँ से भूदान प्राप्त हुआ है : २९५१, कुल ग्रामदान : १२ (मुरैना जिले की सबलगढ़, श्योपुर तथा जोरा तहसीलों में), सर्वाधिक भूदान का जिला : गुना २७१०३·२५ एकड़। दाता-संख्या ४१७, सर्वाधिक भूदान-दाताओं का जिला : मुरैना २६१६ (भूदान : ७०८१·१६ एकड़), कुल प्राप्त संपत्तिदान-संकल्प-पत्र १२७९, कुल संपत्तिदान-संकल्प वार्षिक रु० २७५९५-७-६, अधिकतम संपत्तिदान का जिला : मुरैना, रु० ९६००-४-३ वार्षिक, कुल जीवनदानी संख्या ४४, कुल वैतनिक कार्यकर्ता २४; कुल अवैतनिक कार्यकर्ता ४०, सन् ५६ में प्राप्त कुल सूत्राजंलि, ४५१० गुंडियाँ।

—**महेन्द्रकुमार**, दफ्तर-मंत्री

राजस्थान

जयपुर जिले की फागी तहसील के वूंकणी ग्राम में २४ सितंबर को १०० बीघा भूमि ११ भूमिहीन परिवारों में वितरित की गयी।

सहसंयोजक श्री पूर्णचंद्र जैन ने १३ सितंबर से बीकानेर में बेसिक स्कूल तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं के बीच प्रचार किया। १५ से १८ ता. तक आसपास के गाँवों की पदयात्रा की। १९ को शेरेराँ में भूदान-संमेलन हुआ। ४० मील की पदयात्रा में १०० बीघा भूदान, साधनदान में १० हल तथा कुछ संपत्तिदान भी मिला। शेरेराँ के नवयुवकों ने एक वर्ष तक प्रति मास ३ दिन का समय ग्राम-सफाई के लिए देने का निश्चय प्रकट किया।

खादी-केन्द्र, फूलिया के कार्यकर्ताओं ने विनोबा-जयंती से गांधी-जयंती तक ९० मील की ४० गाँवों में पदयात्रा कर के सर्वोदय संदेश का प्रचार किया। साहित्य-बिक्री की, ग्राहक बनाये। भूदान भी मिला। दो-चार सभाओं में पदयात्रा-टोली को चुनाव वाले समझ कर लोग पीटने आये थे, लेकिन सर्वोदय-विचार प्रेम से समझाने पर वे माफी माँग कर लौट गये।

सितंबर के अंतिम पाँच दिनों में चितौड़गढ़ जिले में पदयात्रा हुई। पाँच गाँवों के २२ भूमिहीन व अल्प भूमिवाले २२ परिवारों में ७९ बीघा भूमि वितरित की। रूद्रग्राम में भी २० बीघा भूमि ४ परिवारों में वितरित की। छोटी सादडी तहसील में २ दाताओं द्वारा ४५ बीघा भूदान मिला।

उत्तर प्रदेश

फैजाबाद जिले में सितंबर माह में ८५ एकड़ भूमि ३९ परिवारों में वितरित की गयी। साहित्य-बिक्री हुई। ग्राहक बनाये। २४ घंटे के अखंड चरखा-यज्ञ में २७ गुंडियाँ सूत काता गया।

हमीरपुर जिले में दो पदयात्री टोलियों का सघन पदयात्रा का द्वितीय भ्रमण कुरारा मंडल में समाप्त हुआ। करीब १८ एकड़ भूमि मिली। २६६ एकड़ भूमि ४२ परिवारों में वितरित की गयी। संपत्तिदान मिला। ग्राहक बनाये। साहित्य-बिक्री हुई। हमीरपुर तहसील के ३ गाँवों की यात्रा हो चुकी है। यह यात्री दल आगे झांसी जिले में पदयात्रा करेगा।

उत्कल की ग्रामदान-क्रांति की प्रगति

अगस्त-सितंबर में कोरापुट जिले में ५६ गाँव तथा गंजाम जिले में १४ गाँव ग्रामदान में और मिले हैं। कुल १२०० गाँव हुए। कार्यकर्ताओं की कमी से ही ग्रामदान प्राप्त करने में संकोच होता है, परंतु ग्रामदान देने का उत्साह दिनों-दिन लोगों में बढ़ रहा है।

—ता० २३ अक्टूबर '५६ को आंर्वी (जिला वर्धा) में स्व० श्रीकृष्णदासजी जाजू की प्रतिमा का अनावरण करके श्री जयप्रकाशजी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

भूल-सुधार: ता० ५ अक्टूबर के अंक में पृष्ठ ९ के पहले कॉलम में नीचे से ११वीं पंक्ति में 'कार्य सम्भव-सा' के स्थान पर कृपया 'कार्य असम्भव-सा' पढ़ें।—सं०

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	विश्वशांति की राह	विनोबा	१
२.	श्रद्धेय जाजूजी का पुण्य-स्मरण	दामोदरदास मूंदड़ा	२
३.	धर्म-निरपेक्षता से राज्य-निरपेक्षता की ओर	काकासाहब कालेलकर	३
४.	भूदान, भारत और स्वेज़	सुरेशराम भाई	४
५.	समारंभ के साथ शुभारंभ भी—	वल्लभस्वामी	५
६.	गरीबों की ताकत कैसे बढ़ेगी ?	विनोबा	६
७.	सर्वोदय की दृष्टि :		
	१. यातायात का प्रश्न	सिद्धराज	६
	२. सुस्वागतम् !	लक्ष्मीनारायण भारतीय	६
८.	जिन हाथों ने हथियार बनाये—	विनोबा	७
९.	साधक के लिए अपरिग्रहवाद	पं० मुनि फूलचंदजी 'श्रमण'	८
१०.	माध्यम का प्रश्न और विनोबा	दामोदरदास मूंदड़ा	८
११.	कलकत्ता की भूदान-पदयात्रा	वल्लभस्वामी	९
१२.	सप्तपदी द्वारा जीवनदीक्षा का संकेत	रामवृक्ष शास्त्री	९
१३.	इसका नाम है क्रांति !	विनोबा	१०
१४.	तमिलनाड की पदयात्रा से—	निर्मला देशपांडे	१०
१५.	गांधी-जयंती के अवसर पर	——	११
१६.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण आदि	——	११-१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भागव-भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी। फोन नं० १२८५

www.vinoba.in